आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

आईएसबीएन : 978-93-7029-919-1|वर्ष-4|अंक-02 फरवरी, 2025

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर-273007 (उ.प्र.)

आरोग्य पथ

Editors :

Dr. Vimal Kumar Dubey (Chief Editor)

Dr. Sadhvi Nandan Pandey (Editor)

© **Editors**

Edition : 2025

Pages : 38

Size : A4

Paper Quality (GSM) : NIL (Only Electronic)

Published by :

Mahayogi Gorakhnath University Gorakhpur

Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur,

Uttar Pradesh-273007

Tel. : +9999764424, 8765005177

E-mail : mguniversitygkp@mgug.ac.in

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

सम्पादकीय

भारतीय ज्ञान परंपरा में आत्मनिर्भरता

गगन में देदीप्यमान नक्षत्र, हिमालय के उत्तुंग शिखर गंगा-यमुना की कल-कल करती हुई लहरें तथा अपनी सुरभि से दशों दिशाओं को सुगन्धमय करने वाले सुवासित पुष्प यही उद्घोष करते प्रतीत होते है।

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखं।एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥

आत्मनिर्भरता का शाब्दिक अर्थ धातव्य है। आत्मनि निर्भरता (षष्ठी तत्पुरुष समास) 'आत्म' अर्थात् 'स्व' और 'निर्भरता' निर्भर, 'आत्मनिर्भरता' अर्थात् जो स्व (सेल्फ) में अतिशय हो पूर्ण हो या अन्य की जिसे अपेक्षा न हो उसे आत्मनिर्भर कहा जाता है।

भारत की बौद्धिक आत्मनिर्भरता में संस्कृत शास्त्रों की भूमिका अतिशय महत्त्वपूर्ण रही है। क्योंकि संस्कृत साहित्य एवं शास्त्रों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय प्रज्ञा पुरातन काल से ज्ञान-विज्ञान की विविध शाखाओं-प्रशाखाओं का तलस्पर्शी ज्ञान रखती थी। भारत की प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा बौद्धिक आत्मनिर्भरता के लिए पथ प्रदर्शक है।

'उद्यानं ते पुरुष नावयानम् और उत्क्राम महते सौभाग्य

जैसे वेदवाक्य आत्मनिर्भर होने के लिए सतत प्रेरित करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा की बौद्धिक आत्मनिर्भरता सर्वविद् सत्य है। विज्ञान, तकनीकी, कला, साहित्य, शास्त्र, व्यवहार से लेकर तत्वचिंतन तक भारतवर्ष भारतीय ज्ञान परम्परा में आत्मनिर्भरता मात्र आत्मनिर्भर अपितु विश्वगुरु भी था। भारतीय ज्ञान के इस प्रवहरण का मूल स्रोत वेद साहित्य ही है, सभी विद्याएं इसी का विस्तार हैं। आधुनिककालीन आत्मनिर्भरता के स्रोत पुरुषार्थ की अपेक्षा भाग्यवाद पर अधिक निर्भर हैं तथा आज के स्रोत हमें नीतिमत्ता से दूर येन-केन-प्रकारेण स्वार्थ बनाते जा रहे हैं। चाहे शेयर बाजार हो या कोई भी उद्योग वहाँ पुरुषार्थ करने पर भी अन्ततोगत्वा भाग्य पर आधारित रहना पड़ता है। वेद के उपदेश सतत् सुपथा नीतिमार्ग पर गमनशील करते हुए सामाजिक, शारीरिक, आत्मिक उन्नति की भावना के साथ पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देते हैं। वेद आत्मनिर्भरता के लिए आवश्यक कर्त्तव्यबोध, कर्मण्यता, जागृति, नीतिमत्ता, शुभसंकल्प और सर्वजनसुख सर्वजनहित की भावना को आवश्यक मानते हैं। वेद में पदे पदे उत्साह, आशावाद, सकारात्मकता, परिश्रम और पुरुषार्थवाद दृष्टिगोचर होता है।

धनं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।

प्राचीन भारत में विद्याग्रहण में सभी का अधिकार था। प्राचीन भारतीय संस्कृति में आत्मनिर्भरता का अर्थ उच्चतम कोटि में उपलब्ध होता है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के आत्मतत्त्व का गहन चिन्तन मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की प्रस्तावना में कहा गया है कि 'ज्ञान प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परम्परा और दर्शन में सदा सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्मज्ञान और मुक्ति के रूप में माना जाता था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रों में शिक्षण और शोध के ऊंचे प्रतिमान स्थापित किए थे और विभिन्न पृष्ठभूमि और देशों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था।'

भारतीय शिक्षा प्रणाली में मौलिक चिन्तन एवं आत्मनिर्भरता का ही यह परिणाम रहा कि इस शिक्षा व्यवस्था ने विश्व को चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराह मिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, पाणिनि, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, मैत्रेयी, गागध जैसी विद्वत्परम्परा को जन्म दिया जिसने गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, शल्य चिकित्सा, नागरिक शास्त्र, भवन निर्माण, नौकायान निर्माण, भूगोल, विज्ञान, योग, ललित कला, शतरंज आदि वैश्विक स्तर के ज्ञान के विविध क्षेत्रों में प्रामाणिक रूप से मौलिक योगदान दिया है। इन्हीं क्षेत्रों में एक क्षेत्र है शिक्षा, जिसमें भारतीय चिन्तन प्रणाली के बौद्धिक रूप से आत्मनिर्भर होने के कारण इसने विश्व इतिहास की सर्वोच्च प्रज्ञ को जन्म दिया है।

सम्प्रति विश्व में प्रचलित ज्ञान और औद्योगिक प्रणाली के मूल में भी प्राचीनतम भारतीय ज्ञान परम्परा का योगदान अवश्य है। हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी भविष्यकालीन 'आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को पूर्वपीठिका प्रस्तुत करती है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा जिसको नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 'भारतीय ज्ञान प्रणाली' तथा 'संस्कृत ज्ञान प्रणाली' कहा गया है, यह भारतीय ज्ञान प्रणाली विविध क्षेत्रों में भारत के आत्मनिर्भर होने के लिए एक प्रकाश स्तम्भ के रूप में मार्गदर्शक का काम करती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के अमृत महोत्सव के अवसर पर अभी भी बहुत से क्षेत्रों में पर हम पराश्रित है, कुछ क्षेत्रों में तो हम अन्य का अनुकरण मात्र कर रहे हैं। राजनीति, अर्थनीति, विज्ञान, कृषि, प्रशासन, निर्माण, कला इत्यादि क्षेत्रों में आत्मानिर्भरता वस्तुतः बौद्धिक आत्मनिर्भरता के अधीन है। इसीलिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में अनेक स्थानों पर प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा के माध्यम से भाषा, तकनीकी, कौशल, कला इत्यादि क्षेत्रों में किस तरह से प्रगति की जाये, इसका विवरण प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त वित स्वबंस, स्वदेशी वस्तुओं के क्रय का आग्रह इत्यादि प्रकल्प भी बौद्धिक आत्मनिर्भरता की दिशा में किए जा रहे विभिन्न प्रयास है।

प्रकाशक
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

माह विशेष

बसंत पंचमी

बसंत पंचमी हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखने वाला पर्व है, जो माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। इसे दक्षिण भारत में श्री पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। पूरे देश में सरसों के पीले फूलों से सजे खेत इस मौसम की खासियत हैं, जो बसंत के आगमन का संकेत देते हैं। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, इस दिन भगवान ब्रह्म ने ब्रह्मंड का निर्माण किया था। साथ ही, इस दिन देवी सरस्वती का जन्म भी हुआ था। इसलिए इस दिन को विद्या और ज्ञान की देवी की पूजा के लिए समर्पित किया जाता है। बसंत पंचमी को न केवल एक धार्मिक पर्व के रूप में, बल्कि एक नए सृजन और ज्ञान की शुरुआत के रूप में भी मनाया जाता है। माघ माह को हिंदू धर्म में त्योहारों का महीना कहा जाता है, क्योंकि इस दौरान सकट चौथ, षटतिला एकादशी, मौनी अमावस्या और गुप्त नवरात्रि जैसे प्रमुख पर्व मनाए जाते हैं। बसंत पंचमी भारत के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग तरीकों से मनाई जाती है। पंजाब में इसे पतंगों के त्योहार के रूप में मनाया जाता है, जहां लोग पीले कपड़े पहनते हैं और पीले चावल खाते हैं। महाराष्ट्र में विवाहित जोड़े इस दिन पीले कपड़े पहनकर मंदिरों में जाते हैं। राजस्थान में लोग इस दिन चमेली की माला पहनते हैं, जबकि बिहार में सूर्य देवता की पूजा की जाती है और उनकी प्रतिमा को धोकर सजाया जाता है।

बसंत पंचमी का पर्व इस बात का प्रतीक है कि हम सभी को ज्ञान की प्राप्ति के लिए समर्पण और श्रम करना चाहिए। यह दिन न केवल खुशी का प्रतीक है, बल्कि आत्म-संवर्धन और सीखने का दिन भी है। छात्रों के लिए यह दिन महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि उन्हें विश्वास होता है कि देवी सरस्वती उनके करियर और शिक्षा में सफलता का आशीर्वाद देती हैं। यह दिन न केवल छात्रों, बल्कि हर व्यक्ति के लिए एक नया उत्साह और दिशा लेकर आता है। इस दिन की पूजा और परंपराओं को पूरे श्रद्धा और विश्वास के साथ मानने से जीवन में सुख, समृद्धि और सफलता का मार्ग प्रशस्त होता है। वसंत पंचमी के इस पावन अवसर पर हम सभी को देवी सरस्वती से आशीर्वाद प्राप्त हो और हम अपने जीवन में सफलता की ऊंचाइयों तक पहुंचें।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

हमारी विरासत

महर्षि पाणिनि

पाणिनि चौथी शताब्दी ईसा पूर्व संस्कृत भाषा के सबसे प्रसिद्ध वैयाकरण हुए हैं। इनका जन्म तत्कालीन उत्तर पश्चिम भारत के शालातुर ग्राम में हुआ था। इनके व्याकरण का नाम अष्टाध्यायी है जिसमें आठ अध्याय और लगभग चार सहस्र सूत्र हैं। संस्कृत भाषा को व्याकरण सम्मत रूप देने में पाणिनि का योगदान अतुलनीय माना जाता है। अष्टाध्यायी मात्र व्याकरण ग्रन्थ नहीं है। इसमें प्रकारान्तर से तत्कालीन भारतीय समाज का पूरा चित्र मिलता है। उस समय के भूगोल, सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और राजनीतिक जीवन, दार्शनिक चिन्तन, खान-पान, रहन-सहन आदि के प्रसंग स्थान-स्थान पर अंकित हैं।

पाणिनि से पहले शब्दविद्या के अनेक आचार्य हो चुके थे। उनके ग्रंथों को पढ़कर और उनके परस्पर भेदों को देखकर पाणिनि के मन में यह विचार आया कि उन्हें व्याकरणशास्त्र को सुव्यवस्थित करना चाहिए। पहले तो पाणिनि से पूर्व वैदिक संहिताओ, शाखाओं, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि का जो विस्तार हो चुका था उस वाङ्मय से उन्होंने अपने लिये शब्दसामग्री ली जिसका उन्होंने अष्टाध्यायी में उपयोग किया है। दूसरे निरुक्त और व्याकरण की जो सामग्री पहले से थी उसका उन्होंने संग्रह और सूक्ष्म अध्ययन किया। इसका प्रमाण भी अष्टाध्यायी में है, जैसा शाकटायन, शाकल्य, भारद्वाज, गार्ग्य, सेनक, आपिशलि, गालब और स्फोटायन आदि आचार्यों के मतों के उल्लेख से ज्ञात होता है। शाकटायन निश्चित रूप से पाणिनि से पूर्व के वैयाकरण थे, जैसा निरुक्तकार यास्क ने लिखा है। शाकटायन का मत था कि सब संज्ञा शब्द धातुओं से बनते हैं। पाणिनि ने इस मत को स्वीकार किया किंतु इस विषय में कोई आग्रह नहीं रखा और यह भी कहा कि बहुत से शब्द ऐसे भी हैं जो लोक की बोलचाल में आ गए हैं और उनसे धातु प्रत्यय की पकड़ नहीं की जा सकती। तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात पाणिनि ने यह की कि उन्होंने स्वयं लोक को अपनी आँखों से देखा और घूमकर लोगों के बहुमुखी जीवन का परिचय प्राप्त करके शब्दों को छाना। इस प्रकार से कितने ही सहस्र शब्दों को उन्होंने संकलित किया।

पाणिनि ने सहस्रों शब्दों की व्युत्पत्ति बताई जो अष्टाध्यायी के चौथे पाँचवें अध्यायों में है। पाणिनि ने यह बताया कि किस शब्द में कौन सा प्रत्यय लगता है। वर्णमाला के स्वर और व्यंजन रूप जो अक्षर है उन्हीं से प्रत्यय बनाए गए। जैसे- वर्षा से वार्षिक, यहाँ मूल शब्द वर्षा है उससे इक् प्रत्यय जुड़ गया और वार्षिक अर्थात् वर्षा संबंधी यह शब्द बन गया।

अष्टाध्यायी में तद्धितों का प्रकरण रोचक है। कहीं तो पाणिनि की सूक्ष्म छानबीन पर आश्चर्य होता हैं, जैसे व्यास नदी के उत्तरी किनारे की बाँगर भूमि में जो पक्के बारामासी कुएँ बनाए जाते थे उनके नामों का उच्चारण किसी दूसरे स्वर में किया जाता था और उसी के दक्खिनी किनारे पर खादर भूमि में हर साल जो कच्चे कुएँ खोद लिए जाते थे उनके नामों का स्वर कुछ भिन्न था। यह बात पाणिनि ने 'उदक् च बिपाशा' सूत्र में कही है।

पाणिनि से पूर्व एक प्रसिद्ध व्याकरण इंद्र का था। उसमें शब्दों का प्रातिकंठिक या प्रातिपदिक विचार किया गया था। उसी की परंपरा पाणिनि से पूर्व भारद्वाज आचार्य के व्याकरण में ली गई थी। पाणिनि ने उसपर विचार किया। बहुत सी पारिभाषिक संज्ञाएँ उन्होंने उससे ले लीं, जैसे सर्वनाम, अव्यय आदि और बहुत सी नई बनाई, जैसे टि, घु, भ आदि।

प्रकाशक
महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

समझौता ज्ञापन

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

समझौता ज्ञापन में कुलपति डॉ. सुरेंद्र सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, डॉ. जी. एन. सिंह, डॉ. आर. के. सिंह, डॉ. विमल कुमार दुबे, डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय एवं आशीष कुमार सिंह

दिनांकः 03 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर में डॉ. जी. एन. सिंह, पूर्व औषधि महानियंत्रक, भारत सरकार की अध्यक्षता तथा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुरेंद्र सिंह व कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव की उपस्थिति में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर तथा महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, गोरखपुर के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. आर. के. सिंह तथा विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे जी के द्वारा हस्ताक्षर किए गए।

इस समझौता ज्ञापन के द्वारा दोनों ही संस्थाओं को मिलकर कृषि क्षेत्र में छात्रों की शिक्षा एवं अनुसंधान दोनों को बढ़ावा देने में सहायता प्राप्त होगी। साथ ही तकनीकियों को साझा भी किया जाएगा तथा किसानों तक कृषि की उन्नत तकनीकी के विस्तारीकरण पर भी एक साथ उन्नत कार्य किया जाना संभव होगा। किसानों एवं छात्रों को कृषि विषय सम्बंधित कार्यशाला, प्रशिक्षण, शोध कार्य, ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव इत्यादि से भी लाभान्वित किया जा सकेगा।

इस अवसर पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय एवं फॉर्म मैनेजर श्री आशीष कुमार सिंह उपस्थित रहे।

अतिथि व्याख्यान

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्री कृष्ण चंद एवं उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए डॉ. शशिकांत सिंह

दिनांकः 03 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अन्तर्गत संचालित फार्मेसी संकाय में अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसका विषय था 'औषधीय औद्योगिकी का परिचय'। व्याख्यान में सी.ओ.ई.(उत्कृष्टता केंद्र) प्रशिक्षण और प्लेसमेंट के हेड, श्री कृष्ण चंद, मुख्य वक्ता थे। श्री कृष्ण चंद ने फार्मास्युटिकल उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग और शिक्षा के बीच संबंधों के महत्व को भी समझाया और उन्हें फार्मास्युटिकल उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार अपने कौशल और ज्ञान को विकसित करने के लिए प्रेरित किया। फार्मेसी संकाय के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. शशिकांत सिंह जी ने कहा कि इस तरह के अतिथि व्याख्यान छात्रों को उद्योग जगत के बारे में जानने और समझने का एक अच्छा अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि संस्थान भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन करता रहेगा।

व्याख्यान के अंत में फार्मेसी संकाय के सहायक आचार्य श्री पीयूष आनन्द जी ने आभार व्यक्त किया। इस व्याख्यान के दौरान फार्मेसी संकाय के शिक्षकगण में श्री दिलीप मिश्रा, श्री पियूष आनंद, श्रीमती जूही तिवारी एवं फार्मेसी संकाय के विद्यार्थी उपस्थित रहें।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

प्रकाश दीक्षा संकल्प शपथ समारोह

उद्घाटन समारोह

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज

प्रकाश दीक्षा संकल्प शपथ समारोह में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्रो. भाबतोष विश्वास एवं डॉ. जी. एन. सिंह

दिनांकः 03 फरवरी, 2025। बसंत पंचमी के पावन दिन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरा मेडिकल द्वारा आयोजित प्रकाश दीक्षा संकल्प शपथ समारोह में दीपोत्सव संकल्प से नर्सेस दीक्षित हुई। मां शारदे, भारत माता, गुरु गोरक्षनाथ, महाराणा प्रताप, राष्ट्र संत महंत दिग्विजय नाथ जी, युग पुरुष महंत अवेद्यनाथ जी के चित्र पर पुष्प अर्पण एवं वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ दीप संकल्प दीक्षा का शुभारंभ हुआ।

मुख्य अतिथि वेस्ट बंगाल विश्वविद्यालय ऑफ हेल्थ साइंसेज के पूर्व कुलपति और सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय कोलकाता के एमेरिटस प्रोफेसर प्रो. भाबतोश विश्वास, विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व ड्रग कंट्रोलर और मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के सलाहकार डॉ. जी. एन. सिंह, कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह जी, प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा, नर्सिंग प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा ने दीप प्रज्ज्वलित किया। कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव और प्राचार्या डॉ. डी. एस. अजीथा जी ने सभी अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि प्रो. भाबतोश विश्वास, वेस्ट बंगाल विश्वविद्यालय ऑफ हेल्थ साइंसेज के पूर्व कुलपति और सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय कोलकाता के एमेरिटस प्रोफेसर ने विद्यार्थियों को बसंत पंचमी की शुभाशीष देते हुए चिकित्सा में समर्पण, सेवा और कर्तव्य निष्ठा का संकल्प दिलाया।

मुख्य अतिथि डॉ. भाबतोष विश्वास ने कहा कि बसंत पंचमी के पावन पर्व पर सेवा संकल्प का उत्कृष्ठ भाव अर्पण गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आज समर्पित भाव से हुआ। गुरु गोरक्षनाथ नर्सिंग कॉलेज विश्व के श्रेष्ठ संस्थानो में है नर्सिंग कॉलेज ने नई चुनौतियों को स्वीकार कर चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में एक नए नवाचार की शुरुआत कर दिया है। चिकित्सा सेवा में अग्रणी भूमिका निभाने में यहां के नर्सेज ब्रांड एंबेसेडर बन कर विश्व के अग्रणी संस्थानों में सेवा कार्यों के लिए लोगों को प्रेरित करेंगे। नर्सिंग में यूरोप के प्रति हम कृतज्ञ है प्राचीन वैदिक चिकित्सा में महर्षि चरक ने विश्व को चिकित्सा सेवा का अनमोल ज्ञान दिया जिसे पूरा विश्व अनुकरण कर रहा है। आप सभी नर्सेज आदर्श है, मरीज की सेवा, प्यार और भाव अर्पण से जुड़ कर करेंगे तो सेवा फलीभूत होगा। जिस तरह भगवान अपने भक्त की सेवा करते है, उसी तरह से आपको मरीज की सेवा के लिए समर्पित रहना है। नर्सिंग सेवा में बहुत तेजी से बदलाव और चुनौती आई है नर्सिंग में संभावनाओं के असीम द्वार खुले है यहां शोध की दृष्टि से भी अनंत संभावनाएं हैए कोई भी नर्स कभी बेकार नहीं होते आप को कभी विश्राम नहीं मिलेगा आप में निरंतर प्रेरणा संजीवनी बना रहेगा, स्वास्थ सेवा दुनिया का सबसे बड़ा कार्य क्षेत्र है जहां 45 लाख नर्सिंग की आवश्यकता है भारत पूरे विश्व को नर्स की आवश्यकता को पूरा करता है, माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस क्षेत्र में निरंतर प्रयास कर रहे हैं जिससे चिकित्सा सेवा और समृद्ध हो।

नर्सिंग सेवा समृद्ध प्रोफेशन है। नर्सेज नेतृत्व ने पूरी दुनिया में अपने सेवा कार्यों से अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित किया है। देश सेवा के लिए समर्पण भाव अर्पण रहना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व ड्रग कंट्रोलर और मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के सलाहकार डॉ. जी. एन. सिंह ने नवोदित नर्सिंग छात्राओं में नई ऊर्जा का संचार करते हुए कहा कि गुरु गोरखनाथ विश्व विद्यालय नई ऊर्जा संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा है। नर्सिंग कॉलेज उत्तर प्रदेश में उत्तम सेवा के लिए प्रेरणादायक संस्थान बना है। छात्र जीवन में साधना के साथ सामंजस्य संतुलन बना कर चलना होगा। स्वास्थ के क्षेत्र में नए संकल्पों के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी महाराज प्रतिबद्ध है। चिकित्सा और शिक्षा के उत्तरोत्तर विकास के लिए यूरोप, जापान और इजरायल के साथ समझौता पत्र के द्वारा यहां के प्रोफेशनल विद्यार्थियों को शत प्रतिशत रोजगार के लिए प्रयास किया जा रहा है। जिससे स्वास्थ

प्रकाश दीक्षा संकल्प शपथ समारोह में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए माननीय कुलपति डॉ. सुरिन्दर सिंह एवं डॉ. अरविन्द सिंह कुशवाहा

प्रकाश दीक्षा संकल्प शपथ समारोह में शपथ ग्रहण करते विद्यार्थी

चिकित्सा और शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। रामायण में भी सेवा का मूल है उत्तर प्रदेश विश्व गुरु बनेगा। नर्सेज के सेवा योगदान से यह विश्वविद्यालय सर्वोच्च संस्थान बनकर विश्व का प्रतिनिधत्व करेगा।

गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने नवोदित नर्सिंग छात्राओं का दीक्षा मार्गदर्शन करते हुए कहा नर्सेज सेवा में रोजगार की अनंत संभावनाएं है नर्सेज सेवा संकल्प भाव से इस क्षेत्र में स्वयं को उतारे जिससे चिकित्सा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन आ सके। समाज और पीड़ित व्यक्ति आपके प्रति आशान्वित रहता है की नर्स दीदी है तो उसे जीवन का वरदान मिल जायेगा। आपको संकल्प लेना है की मरीज के इस विश्वास पर खरा उतरना है।

नर्सिंग में छात्रों को भी आना चाहिए, प्रोफेशनल नर्स की विश्व स्तर पर भारी मांग है। नए मेडिकल कॉलेज खुल रहे है वर्तमान में नए रोजगार सृजित हुए है यहां आज के परिस्थिति के अनुसार स्वयं की ढालना होगा, सोच बड़ी रखिए यहां से बाहर निकलिए, आज अपने कदम बाहर निकलिए आपके लिए विश्व स्तर पर जॉब है, जर्मनी, जापान में 55 हजार नर्सिंग की आवश्यकता है, अपने आप को संकुचित और कुंठित न रखें अपने आत्मविश्वास को ऊंचा रखिए, ग्लोबल सोच रखिए, हमारा देश ग्लोबल स्तर पर तेजी से बढ़ रहा है। नर्सिंग को और भी समृद्ध करने के लिए मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में नए नवाचार और सृजन से चिकित्सा और शिक्षा को समृद्ध कर रहे है।

मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा ने कहा कि नर्सिंग में सभी को स्वस्थ रखना आपकी नई चुनौती होगी, कोविड में आप ने महत्वपूर्ण चुनौती स्वीकार किया, नर्सिंग में जीवन को समर्पित करने का भाव जागृत होगा। नर्सिंग उच्चतम सेवा कार्य है, नर्स मां जैसी होती हैं जैसी छोटे–छोटे पौधे की नर्सरी होती है उसी निष्ठा, समर्पण से इस व्यवसाय में अपनी सेवा करें।

डॉ. डी. एस. अजीथा ने संकल्प प्रेरणा दिलाते हुए कहा कि भारतीय ज्ञान पद्धति में नर्सेज के भूमिका प्राचीनकाल से चली आ रही है। समय और काल के बदलाव मे दाई मां अब प्रोफेशनल नर्सेज के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है। आज प्रोफेशनल कोर्स से नर्सेज का आत्मविश्वास समृद्ध हुआ है। अब नर्सेज हर विपरीत परिस्थितियों का सामना करने को तैयार है। लैंप लाइटिंग नर्सिंग कॉलेज की दीक्षा का एक अहम हिस्सा है जो नर्सिंग पेशे की गरिमा, जिम्मेदारी और उसके उद्देश्यों को दर्शाता है। यह परंपरा न केवल छात्राओं को उनके भविष्य के कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है, बल्कि उन्हें समाज की सेवा करने के लिए प्रेरित करती है।

नर्सिंग के विद्यार्थियों को सेवा संकल्प का दीप अनुष्ठान कर संगोष्ठी को चिकित्सा सेवा के लिए समर्पित किया। दीप ज्ञान और समर्पण का प्रतीक है। दिव्य ज्योति परम ब्रह्म से ज्योति के दिव्यता को प्रकाशित किया। दिव्यता के भाव से गुरु के समर्पण, आरोग्य, धन संप्रदाए और दिव्य ज्योति को नमन किया। सभी नर्सिंग की परंपरा में वरिष्ठ छात्राओं ने अपने साथियों

के हाथ दिव्य ज्योति को समर्पित कर दिव्यता का संकल्प लिया। मंच संचालन निधि वर्मा, रोमा, आकांक्षा ने किया। कुलगीत संध्या, जाह्नवी, समीक्षा, रिया और शिवांगी ने किया। आयोजन में प्रमुख रूप से श्रीमती मीना सिंह, डॉ. रोहित श्रीवास्तव, ममता रावत, श्वेता अलबर्ट, कविता साहनी, नैंसी मिश्रा, इंदु चौधरी, हर्षिता, सुप्रिया श्रीवास्तव, सौम्या, सारिका, दीपांजलि, ज्योति वर्मा, ममता चौरसिया, गरिमा पाण्डेय, कुँवर अभिनव सिंह राठौड़, अनुप कुमार मिश्रा, शुभम कुमार मौर्य, कुलदीप यादव, संदीप शर्मा, अंकिता दीक्षित, माधुरी चौरसिया, आदर्श मिश्रा, आकांक्षा दीक्षित, आयुषी राज, धीरज कुमार, जय शंकर पांडे, सुप्रिया गुप्ता, विशालदीप, संजीव विश्वकर्मा, अर्पणा प्रजापति, ज्योति गुप्ता, खुशी चौधरी, आकाश वर्मा, सहित सभी शिक्षक एवं अभिभावकगण उपस्थित रहें।

‘सिमुलेशन और ओएससीइ’ वर्कशॉप

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज

‘सिमुलेशन और ओएससीइ’ वर्कशॉप के दौरान प्रतिभागियों को सम्बोधित करती श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज एवं सुश्री स्वेता अल्बर्ट

‘सिमुलेशन और ओएससीइ’ वर्कशॉप में डेलिगेस्ट् को सम्बोधित करती नर्सिंग कॉलेज की प्राचार्या डॉ. डी.एस. अजीथा

दिनांकः 03 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में ‘सिमुलेशन और ओएससीइ’ वर्कशॉप का आयोजन किया गया।

जिसका मुख्य थीमः ‘ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रैक्टिस’ रहा। आज 3 फरवरी 2025 को इस कार्यक्रम का पहला दिन रहा, जिसकी शुरुआत पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य भाषण के साथ थीम का अनावरण डॉ. डी. एस. अजीथा (प्रधानाचार्या, फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल कॉलेज) द्वारा किया गया,

उन्होंने बताया कि सिमुलेशन यथार्थवादी परिदृश्य बनाने की विधि है जो छात्रों को कौशल का अभ्यास करने की अनुमति देता है यह छात्रों को निर्णय लेने की क्षमता, समस्या समाधान की क्षमता विकसित करने में मदद करता है तथा उन्हें सुरक्षित वातावरण में सिद्धांतों को लागू करने की अनुमति देता है। सिमुलेशन का उद्देश्य मानवीय त्रुटि को कम करना, रोगी देखभाल कौशल का अभ्यास करना, गलती की अनुमति देना और उसमें सुधार करना है। इसलिए, कड़ी मेहनत की तुलना में स्मार्ट काम करना अच्छा है, उन्होंने सिमुलेशन की विभिन्न पद्धतियों के बारे में भी बताया जो मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं —पहला क्लासिकल एक देखें, एक करें, एक सिखाएं और दूसरा आधुनिक, एक देखें, कई अभ्यास करें और एक करें। आज के समय में सिमुलेशन भी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि केवल व्याख्यान देने से केवल 10 प्रतिशत परिणाम मिलता है लेकिन हम अन्य शिक्षण पद्धति के माध्यम से 90 प्रतिशत से अधिक परिणाम देख सकते हैं इसमें मुख्य रूप से 5 घटक हैं, सिमुलेशन योजनाएं पूर्व संक्षिप्त विवरण, परिदृश्य, डीब्रीफिंग, मूल्यांकन इसलिए हमने कहा कि सिमुलेशन तकनीक नहीं है यह एक पद्धति है।

साथ ही सुश्री स्वेता अल्बर्ट, नर्सिंग ट्यूटर ने सिमुलेशन पर पूर्व परीक्षण कराया, उप प्राचार्य श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज ने कार्यशाला के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी, श्रीमती ममता, सहायक प्रोफेसर ने वर्कशॉप के अमीन उद्देश्य बारे में बताया और अंत में श्रीमती रजिता आर. एम. ए. एसोसिएट प्रोफेसर ने समूह की सहायता से सिमुलेशन के संबंध में अपेक्षा पर चर्चा की।

निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर

दिग्विजयनाथ चिकित्सालय

निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर के दौरान मरीजों के नेत्र एवं स्वास्थ्य परीक्षण करते तकनीशियन

दिनांकः 03 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, बालापार के दिग्विजयनाथ चिकित्सालय में आयोजित में आयोजित निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर में 213 लोगों के नेत्रों का परीक्षण किया गया।

शिविर का आयोजन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर, आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर और गुरु श्री गोरक्षनाथ चिकित्सालय, गोरखनाथ मंदिर परिसर गोरखपुर द्वारा किया गया। परीक्षण शिविर का उद्घाटन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, चिकित्सालय इंचार्ज एवं नर्सिंग प्राचार्य डॉ. डी. एस. अजिथा के उपस्थिति में हुआ।

नेत्र सर्जन डॉ. ए. पी. त्रिपाठी के नेतृत्व में मरीजों की निःशुल्क जांच कर निःशुल्क नेत्र शल्य और निःशुल्क दवाएं प्रदान किया गया। इस दौरान मरीजों को ऑपरेशन की सुविधा भी निःशुल्क प्रदान की गई।

चिकित्सालय इंचार्ज डॉ. डी. एस. अजिथा में बताया कि दिग्विजय नाथ चिकित्सालय निरन्तर लोगों की सेवा में उपलब्ध रहता है और यहा मरीजों की सेवा ईश्वरीय सेवा भाव से की जाती है। अगली निःशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर 2 मार्च 2025 को संभावित है।

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप के दौरान डेलिगेस्ट को जानकारी देते श्री राहुल बिष्ट

दिनांकः 04 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में 'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप का आयोजन किया गया था।

जिसका मुख्य थीमः 'ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रैक्टिस' रहा। आज 4 फरवरी 2025 को इस कार्यक्रम का दूसरा दिन रहा, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्माननीय अतिथि श्री राहुल बिष्ट (चीफ सेम्यूलेशन एजुकेटर, डेल्टा हेल्थकेयर) उपस्थित थे और उन्हें नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के प्राचार्य डॉ. डी. एस. अजिथा द्वारा दिए गए स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम की शुरुआत पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ की गई, उत्तेजना पर परिचय एवं सिमुलेशन आधारित शिक्षा का प्रदर्शन माननीय श्री राहुल बिष्ट (चीफ सेम्यूलेशन एजुकेटर, डेल्टा हेल्थकेयर) द्वारा दिया गया।

इस सत्र में उन्होंने आज के सत्र की शुरुआत नर्सिंग में सिमुलेशन की परिभाषा, बुनियादी अवधारणाओं, घटकों और महत्व पर चर्चा के साथ की। सिमुलेशन, जटिल वास्तविक विश्व प्रक्रिया का पर्याप्त विश्वसनीयता के साथ कृत्रिम प्रतिनिधित्व है, जिसका उद्देश्य

जोखिम के बिना विसर्जन, प्रतिबिंब, प्रतिक्रिया और अभ्यास के माध्यम से सीखने की सुविधा प्रदान करना है। सीखने के चक्र में ज्ञान अर्जन, कौशल प्रवीणता, निर्णय लेना, टीम में अनुकरण और अंतिम नैदानिक अनुभव शामिल हैं। आगामी नर्सिंग पीढ़ी के साथ–साथ स्वयं को उन्नत करने के लिए सिमुलेशन परिदृश्य में कौशल और योग्यता क्यों महत्वपूर्ण हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि हम अपने छात्रों को केवल अपना पिछला या ज्ञात ज्ञान ही हस्तांतरित करते हैं, लेकिन हम अद्यतन ज्ञान नहीं जोड़ते हैं। हम सिमुलेशन लैब में अधिकतम संख्या में त्रुटि कर सकते हैं लेकिन क्लिनिकल क्षेत्र में नहीं क्योंकि इससे पता चलेगा कि उन्होंने कुछ भी नहीं सीखा। हम सभी के पास सैद्धांतिक ज्ञान है, लेकिन हम इसे कौशल ज्ञान में परिवर्तित नहीं कर रहे हैं, इसलिए हमारा उद्देश्य छात्रों को उनकी गलती सुधारने के लिए प्रोत्साहित करना होना चाहिए, जिससे वे अपने क्लिनिक में वही गलती न दोहराएं। सिमुलेशन हमेशा एक टीम (अधिकतम 5 से 7 सदस्य) में चलाया जाता है और हमें इस बात का दबाव नहीं डालना चाहिए कि छात्र को इस बारे में पहले से जानकारी हो। क्योंकि बाद में छात्रों को इससे परेशानी होगी इसलिए हमें प्रत्येक चरण के बारे में पढ़ाने की आवश्यकता है। नर्सिंग में 3 सबसे महत्वपूर्ण चीजें चिकित्सीय स्पर्श, संचार और आध्यात्मिक चिकित्सा हैं क्योंकि यह रोगी की चिंता और भय को दूर करने में मदद करती है। इसके बाद उन्होंने आदर्श सिमुलेशन लैब (रिसेप्शन क्षेत्र, कक्षा कक्ष, सिमुलेशन लैब और संकाय कक्ष, आदि) के बुनियादी ढांचे, नर्सिंग शिक्षा में सिमुलेशन प्रतिमान बदलाव के बारे में चर्चा की।

उन्होंने चिकित्सा त्रुटि के लिए संशोधित हेनरिक अनुपात के बारे में चर्चा की कि लगभग 600 दुर्घटनाएं रिपोर्ट योग्य नहीं होतीं और केवल 30 रिपोर्ट योग्य होती हैं। ये त्रुटियाँ संचार बाधा के कारण होती हैं, इसलिए सबूत के लिए और त्रुटि को रोकने के लिए रिकॉर्ड और रिपोर्ट सबसे महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, हमें सतर्क रहने और कौशल सीखने के साथ निकट पर्यवेक्षक बनने की आवश्यकता है। सीखने के चक्र में ज्ञान अर्जन, कौशल प्रवीणता, निर्णय लेना, टीम में अनुकरण और अंतिम नैदानिक अनुभव शामिल हैं। सिमुलेशन को कक्षा में चलाया जा सकता है, लेकिन इसे प्रभावी ढंग से चलाने के लिए उद्देश्यपूर्ण और उचित कदम का पालन किया जाना चाहिए और इसे छात्रों द्वारा पूरा किया जाना चाहिए। सिम्युलेटर के वर्गीकरण के बारे में बताया गया जो निम्न निष्ठा, टास्क ट्रेनर, मध्यम, मोलाज, उच्च निष्ठा, मध्य सिम्युलेटर, हाइब्रिड और मानकीकृत सिम्युलेटर हैं। सिमुलेशन परिदृश्य की संरचना ब्रीफिंग, सिमुलेशन–वास्तविक सिमुलेशन, डीब्रीफिंग (प्रतिक्रिया, विश्लेषण, सारांश) हैं। सिमुलेशन में समन्वय, संचार और प्रबंधन भाग मौजूद होते हैं। आईएनसी के अनुसार, सिमुलेशन के लिए नर्सिंग पाठ्यक्रम में शामिल नए घटक हैं। चेकलिस्ट, ओएससीई, केस स्टडी और सिमुलेशन। सिमुलेशन शुरू करने से पहले हमें टीम के सदस्यों को मॉडल और लैब की सीमाओं के बारे में समझाना होगा, लैब में रिकॉर्डिंग के लिए कैमरा होना चाहिए लेकिन यह गोपनीय होना चाहिए। हमें पर्यावरण के बारे में कुछ निर्देश देने चाहिए, ताकि पर्यावरण को कोई खतरा न हो, मनुष्य को दिशा–निर्देश मिले, कॉपी और पेन के साथ आने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि हाथों से अभ्यास करना महत्वपूर्ण है, और इसमें सबसे महत्वपूर्ण बात है संचार, अर्थात हमें वास्तविक भाग करने से पहले दो बार सोचना होगा।

उन्होंने संक्षिप्त विवरण देने के बाद सिमुलेशन आधारित शिक्षा के बारे में प्रदर्शन किया और इसके लिए उन्होंने टीम के सदस्यों से प्रक्रिया के दौरान उनके सामने आए अनुभव के बारे में पूछा और उस समय उनसे हुई गलतियों के बारे में बताया तथा यह भी बताया कि हम इसमें किस प्रकार सुधार कर सकते हैं और आज के सत्र के अंत में, प्रतिभागियों द्वारा सिमुलेशन डेमो अभ्यास किया गया।

विश्व कैंसर दिवस : वाद–विवाद प्रतियोगिता

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

वाद–विवाद प्रतियोगिता के दौरान प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थीगण

दिनांकः 04 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना एवं संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में संचालित मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी विभाग में नचिकेता इकाई एवं आर्यभट इकाई के द्वारा विश्व कैंसर दिवस पर एक अतिथि व्याख्यान आयोजित किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. राकेश कुमार मुखिया सह आचार्य मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी विभाग हिन्द मेडिकल कॉलेज अटरिया सीतापुर एवं मुख्य वक्ता श्री

आनन्द कुमार शर्मा, ट्यूटर मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी विभाग हिन्द मेडिकल कॉलेज अटरिया सीतापुर रहें। अपने व्याख्यान में मुख्य अतिथि डॉ. मुखिया ने बताया कि कैंसर 'एक ऐसी बीमारी है जिसमें असामान्य और अनियंत्रित कोशिका विभाजन होता है जो रक्त और लसीका के साथ संचार करके आसपास के ऊतकों और शरीर के दूर के अंगों पर भी हमला करता है। हम तम्बाकू, आहार और जीवनशैली की कुछ आदतों को बदल कर कैंसर को रोका सकते है। हमे कैंसर पीड़ित व्यक्ति से दूरी बनाने के बजाए उनकी मदद करना चाहिए वहीं मुख्यवक्ता श्री आनन्द ने कैंसर के हर पहलू से विद्यार्थियों को अवगत कराते हुए बताया कि कैंसर क्या है कैसे होता है किस प्रकार फैलता है और हम आसानी से लैब में आरटीपीसीआर, बायोपसी इत्यादि के माध्यम से इसके बारे मे पता लगा सकते है कैंसर एक लाइलाज बीमारी नहीं है बस जागरूक होकर समय से चिकित्सा के माध्यम से बचा जा सकता है।

व्याख्यान कार्यक्रम का संचालन सुश्री सृष्टि यदुवंशी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम में समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना डॉ. अखिलेश कुमार दुबे विभागाध्यक्ष मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी विभाग डॉ. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. किरन कुमार, श्रीमती प्रज्ञा पांडेय, श्री जन्मेजय सोनी, के साथ समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहें। कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती रश्मि झा, श्री अनिल कुमार के देखरेख में आयोजित किया गया।

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई.' वर्कशॉप के दौरान डेलिगेट्स को सम्बोधित करतीं डॉ. देवीगा टी. एवं सेमुलेशन समझाते श्री राहुल बिष्ट

दिनांकः 05 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में 'सिमुलेशन एवं ओ.एस. सी.ई.' वर्कशॉप का आयोजन किया गया था। जिसका मुख्य थीमः 'ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रक्टिस' रहा। कार्यक्रम का तीसरा दिन रहा।

कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में सम्माननीय अतिथि डॉ. देवीगा टी. (सहेयक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग एम्स, गोरखपुर) श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज (उप प्रधानाचार्य, फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, एमजीयूजी), श्री राहुल बिष्ट (चीफ सेम्यूलेशन एजुकेटर, डेल्टा हेल्थकेयर) उपस्थित थे और उन्हें फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल के उप प्रधानाचार्य, श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज द्वारा दिए गए स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ की गई। सिमुलेशन आधारित शिक्षा में डीब्रीफिंग की कला पर जानकारी सम्माननीय अतिथि श्री डॉ. देवीगा टी. द्वारा दी गई। इसके माध्यम से निम्नलिखित चीज़ो जैसे– डीब्रीफिंग क्या है, यह क्यों महत्वपूर्ण है, फीडबैक और डीब्रीफिंग में अंतर, कब और कैसे कर सकते हैं, शिक्षार्थी और डीब्रीफिंग का क्षेत्र, इसके लिए सुरक्षित वातावरण कैसे बनाएं, संचालन कौन करेगा, डीब्रीफिंग में प्रतिभागियों की भूमिका, अंतर. व्यावसायिक डीब्रीफिंग और अंत में चुनौतियों के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने बताया कि सिमुलेशन इंटरैक्टिव शिक्षण पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान करता है, सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर को समझाता है। यह जटिल परिस्थितियों में आलोचनात्मक सोच, नैदानिक तर्क और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है। उन्होंने डीब्रीफिंग के बारे में यह भी बताया कि यह एक संरचित, चिंतनशील प्रक्रिया है जो सिमुलेशन आधारित है और जो शिक्षण का अनुसरण करता है। यह प्रतिभागियों को अपने कार्य का विश्लेषण करने, निर्णय लेने पर चर्चा करने और सहायक वातावरण में सुधार के क्षेत्र की पहचान करने की अनुमति देता है। यह प्रदान घटना पर चिंतन की अवधारणा, तत्पश्चात विश्लेषण, चिंतनशील शिक्षण को बढ़ावा देने के अवसर प्रदान करता है। डीब्रीफिंग में दो प्रकार की घटनाएं होती हैं। तीव्र चक्र जानबूझकर अभ्यास और विराम और डीब्रीफिंग। डीब्रीफिंग के चार क्षेत्र हैं। नौसिखिए शिक्षार्थी को नया कौशल सिखाना, ज्ञान और कौशल सिखाना, ज्ञान, कौशल और व्यवहार को सुगम तथा व्यवहार को सुविधाजनक बनाना। इसका संचालन सुविधाप्रदाता, सिमुलेशन विशेषज्ञ, सहकर्मी सुविधाप्रदाता, परामर्शदाता और टीम लीडर द्वारा किया जाना चाहिए। इसके चुनौतीपूर्ण पहलू कुछ इस प्रकार हैं। भावनात्मक तीव्रता, समय प्रबंधन, अस्पष्ट उद्देश्य, सांस्कृतिक और व्यक्तित्व अंतर।

माननीय श्री राहुल बिष्ट (चीफ

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

सेम्यूलेशन एजुकेटर, डेल्टा हेल्थकेयर) ने सिमुलेशन लैब में सिम्युलेटर और मैनिकिन के प्रकार से संबंधित वीडियो दीखते हुए उससे संबंधित संक्षिप्त विवरण दिए। सिमुलेशन आधारित शिक्षा के बारे में प्रदर्शन किया। प्रतिभागियों द्वारा प्रसवोत्तर रक्तस्राव, ऐंठन, सामान्य प्रसव जैसे कुछ सिमुलेशन प्रक्रियाओं पर अभ्यास किया गया।

आज के सत्र के अंत में, सिम्युलेटर ने टीम के सदस्यों से प्रक्रिया के दौरान उनके सामने आए अनुभव के बारे में पूछा और उनसे हुई गलतियों के बारे में तथा हम इसमें किस प्रकार सुधार कर सकते हैं इससे जुडी जानकरिया भी दी।

दवा अनुमोदन प्रक्रिया एवं कैंसर विषय : अतिथि व्याख्यान

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर विषय पर आयोजित व्याख्यान में विद्यार्थियों को जानकारी देते प्रो. (डॉ.) रमा द्विवेदी एवं डॉ. अनुराग श्रीवास्तव

दिनांकः 05 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में दवा अनुमोदन प्रक्रिया पर पंचकर्म सभागार में दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

दवा अनुमोदन प्रकिया व्याख्यान के मुख्य वक्ता जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन डी.सी., यू.एस.ए. के प्रो. (डॉ.) रमा द्विवेदी ने फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन में हो रहे नवाचारों और चुनौतियों पर सभी का मार्गदर्शन किया। दीप प्रज्वलन, मां शारदे के वंदन और वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ व्याख्यान का शुभारंभ हुआ।

व्याख्यान से पूर्व फार्मेसी संकाय के प्राचार्य प्रो.(डॉ.) शशिकांत सिंह जी ने अतिथि प्रो. (डॉ.) रमा द्विवेदी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

डॉ. रमा द्विवेदी ने विदेश यात्राओं का संस्मरण और वैज्ञानिक कार्यों को साझा करते हुए कहा फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन में अन्वेषकीय दृष्टि से अनंत चुनौतियां और संभावनाएं है। उच्च स्तरीय गुणवत्ता के लिए अंतराष्ट्रीय स्तर पर नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में दवाओं पर शोध कार्य किया गया जिससे दवाओं और वैक्सीन के अच्छे परिणाम आए है।

यू.एस. एफ.डी.ए. के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. रमा द्विवेदी ने दवा विकास के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला, जिसमें नई दवाओं का विकास, गैर–नैदानिक मूल्यांकन, नैदानिक परीक्षण शामिल हैं। उन्होंने जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं के बारे महत्वपूर्ण जानकारी साझा करते हुए बताया कि दोनों प्रकार की दवाओं में समान तत्व होते हैं और वे समान औषधीय प्रभाव दिखाते हैं। हालांकि, जेनेरिक दवाएं ब्रांड नाम वाली दवाओं की तुलना में सस्ती होती हैं। डॉ. द्विवेदी ने एफ.डी.ए. द्वारा दवा अनुमोदन की प्रक्रिया को भी विस्तार से समझाया।

उन्होंने बताया कि एफ.डी.ए. कर्मचारी दवाओं की सुरक्षा और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते हैं।

इस सत्र में डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने सामान्य कैंसर, स्तन कैंसर, मुंह के कैंसर और ह्यूमन पैपिलोमावायरस (एच.पी.वी.) का परिचय दिया। डॉ. अनुराग ने कैंसर के प्रभाव उसके उपचार और रोकधाम पर सभी का मार्गदर्शन किया।

व्याख्यान सत्र का संचालन सहायक आचार्य पीयूष आनंद ने किया, धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गिरिधर वेदान्तम जी ने किया।

व्याख्यान सत्र में सम्बद्ध स्वास्थ्य विभाग संकाय, फार्मेशी संकाय, एम.बी.बी.एस. के छात्र छात्राओं ने विद्वतजनों ने प्रश्न पूछा जिसने प्रमुख रूप से छात्र मंजीत यादव, दीन दयाल गुप्ता, निखिल प्रकाश पाण्डेय, नीलेश यादव, मंजूषा द्विवेदी, प्रीतेश कुमार सहित दर्जनों छात्रों ने संबंधित विषय पर प्रश्न किया।

व्याख्यान में प्रमुख रूप से एम,बी.बी.एस. के प्राचार्य डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा, आयुर्वेद प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदान्तम, फार्मेशी संकाय के प्राचार्य प्रो. शशिकांत सिंह, संबद्ध स्वास्थ्य

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप — फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई.' वर्कशॉप के दौरान डेलिगेट्स को जानकारी देते हुए श्री अरुण वर्गीस एवं सुश्री सीमा एस. चव्हाण

दिनांकः 06 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में 'सिमुलेशन एवं ओ.एस. सी.ई' वर्कशॉप का आयोजन किया गया था। जिसका मुख्य थीमः 'ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रैक्टिस' रहा।

आज 6 फरवरी 2025 को इस कार्यक्रम का चौथा दिन रहा। कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में सम्माननीय अतिथि श्री अरुण वर्गीस (सहायक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग एम्स, गोरखपुर), सुश्री सीमा एस. चव्हाण (सह प्राध्यापक, कॉलेज ऑफ नर्सिंग एम्स, गोरखपुर) उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम की शुरुआत पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ की गई। माननीय सीमा एस. चव्हाण ने सभी प्रतिभागियों से परिचय लिया। स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर के लिए सिमुलेशन आधारित शिक्षा का परिचय दिया साथ ही में सिमुलेशन से जुड़ी हुई कुछ जानकारी जैसे–सिमुलेशन की परिभाषा, उद्देश्य, लक्ष्य, चरण, प्री ब्रीफिंग में मुख्य बिंदु दी। परिदृश्य की योजना इस प्रकार बनाई जानी चाहिए कि वह यथार्थवादी हो, प्रशिक्षक परिदृश्य का मार्गदर्शन कर सके, उसका अवलोकन किया जाना आवश्यक हो एवं समय प्रबंधन हो।

माननीय श्री अरुण वर्गीस ने स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों के लिए सिमुलेशन आधारित शिक्षा में नवाचार और उन्नति को बताया। हर साल लगभग 4.2 लाख मौतें हवाई दुर्घटनाओं में होती हैं, हर 10 में से 1 मरीज को स्वास्थ्य सेवा से वंचित होना पड़ता है और हर साल 30 लाख से अधिक मौतें होती हैं, जिससे संकट पैदा होता है। अतः इसके आधार पर संकट संसाधन प्रबंधन की आवश्यकता है और यह पारस्परिक तथा संज्ञानात्मक संसाधन कौशल द्वारा किया जा सकता है। इसमें शामिल कुछ अन्य बिंदु हैं। जागरूकता, प्रत्याशा, संचार, टीमवर्क और प्रतिबिंबन। उन्होंने मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, काल्पनिक संपर्क, पारस्परिक सम्मान और सक्रिय भागीदारी जैसे कुछ बुनियादी नियमों के बारे में भी बताया। इसके अलावा उन्होंने पुतला के प्रकार, इसके उपयोग और लाभ के बारे में बताया जैसे किए टास्क ट्रेनर, ट्रॉमा मैन, सिम्युलेटेड प्रतिभागी, उच्च निष्ठा–मानव रोगी सिम्युलेटर, वीआर और एआर, हाइब्रिड इत्यादी।

सिमुलेशन के लाभ हैं नैदानिक कौशल प्रशिक्षण, इंटरैक्टिव केस स्टडी, टीम आधारित शिक्षण, दूरस्थ शिक्षण आदि। सिम्युलेटर ने टीम के सदस्यों से हृदयाघात पर परिदृश्य डेमो प्रस्तुत कराया और उनके सामने आए अनुभव के बारे में चर्चा की और उनसे हुई गलतियों के बारे में तथा हम इसमें किस प्रकार सुधार कर सकते हैं इससे जुडी जानकरियां भी दी।

उन्होंने प्रतिभागियों को कुछ समूहों में विभाजित किया और उन्हें स्क्रिप्टिंग तैयार करने के बारे में सिखाया तथा उसे तैयार करने को कहा। उसके बाद सभी समूह सदस्यों ने सिम्युलेटर के सामने अपना तैयार परिदृश्य प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने प्री ब्रीफिंग किया, परिदृश्य कैसा था इसके बारे में बताया और अंततः उन्होंने डीब्रीफिंग किया।

उपलब्धि

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

दिनांकः 06 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय एवं सोसाइटी फॉर बायोटेक्नोलॉजिस्ट इंडिया (एसबीटीआई) के सहयोग से 30 मार्च से 01 अप्रैल 2025 तक होने वाले तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी विषयक 'आयुर्वेद एवं बॉयोमेडिकल विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग' के लिए भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने 4 लाख रुपए का अनुदान प्रदान किया है।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने 'आयुर्वेद एवं बॉयोमेडिकल साइंसेज में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोगों पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (बीएएबी–2025) के लिए 4 लाख रुपए का अनुदान के लिए संस्तुति दिया है। प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी से प्राचीन आयुर्वेद के सिद्धांतों को जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र में बहुउपयोगी बनाने का प्रयास किया जाएगा।

आयोजक समिति के सचिव डॉ. अमित दुबे और डॉ. अनुपमा ओझा ने बताया कि अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए अंतराष्ट्रीय स्तर पर देश और विदेश के इजरायल, नेपाल, श्रीलंका, कोरिया, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी आदि से भी विषय विशेषज्ञ प्रतिभाग कर रहे हैं। अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए देश और विदेश के प्रोफेसर और शोधार्थीयों के शोध आलेख शोध प्रकाशन समिति को प्राप्त हो रहे है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि अंतराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मिलने वाले अनुदान से विश्वविद्यालय गौरवान्वित हुआ है।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के आयोजन समिति को इस सराहनीय प्रयास के लिए बधाई और शुभकामनाएं दिया।

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल

वर्कशॉप के दौरान प्रतिभागियों को जानकारी देते हुए डॉ. मोनिका रीटा, श्री भूपेंद्र सिंह यादव,

दिनांकः 07 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ 03.02.2025 से 09.02.2025 तक फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में 'सिमुलेशन एवं ओ.एस. सी.ई' वर्कशॉप का आयोजन किया गया था। जिसका मुख्य थीमः 'ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रैक्टिस' रहा।

आज 7 फरवरी 2025 को इस कार्यक्रम का पांचवां दिन रहा, कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सम्माननीय अतिथि डॉ. मोनिका रीटा हेंड्रिक्स (स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर, जाइपीगो), श्री भूपेंद्र सिंह यादव (ट्यूटर, कॉलेज ऑफ नर्सिंग, एसजीपीजीआई), सुश्री एनी निर्मला (प्रोग्राम ऑफिसर, झाइपीगो) उपस्थित थ।

इस कार्यक्रम की शुरुआत पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ की गई, सत्र की शुरुआत डॉ. मोनिका रीटा हेंड्रिक्स (स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर, जाइपीगो) ने की, जिसमें उन्होंने प्रतिभागियों द्वारा ओ.एस.सी.ई. पर प्री–टेस्ट आयोजित कराया। उन्होंने नैदानिक मूल्यांकन की अवधारणा के बारे में परिचय दिया, जिसमें ओ.एस.सी.ई. के विशेषताओ, सिद्धांतों, उद्देश्य, प्रकार एवं उपकरण पर चर्चा की। नैदानिक मूल्यांकन वह सीमा है जिस्से उद्देश्य पूरे होते हैं। यह वस्तुनिष्ठ, सक्षम, समग्र और प्रामाणिक होना चाहिए। इसके प्रकार रचनात्मक, योगात्मक, आत्मसम्मान, सहकर्मी मूल्यांकन और प्रशिक्षक आधारित हैं। नैदानिक मूल्यांकन को मूलतः तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है, जैसे अवलोकन, मौखिक और लिखित रूप। छात्र का मूल्यांकन करने के लिए उपकरण हैं चेकलिस्ट, उपकरण, चिंतनशील जर्नल, केस स्टडी आदि। श्री भूपेन्द्र सिंह यादव (ट्यूटर, कॉलेज ऑफ कॉलेज, एस.एस.पी.जी.आई.एन.ई.) ने प्रदर्शन मूल्यांकन के लिए ओएससीई के स्वर्ण मानक के बारे में जानकारी दिया।

उन्होंने ओ.एस.सी.ई. के संबंध में अवलोकन, नर्सिंग में महत्व, सिद्धांत और मानदंड प्रदान किए। यह पक्षपात को कम करने के लिए स्वर्ण मानक पद्धति या प्रदर्शन आधारित परीक्षा है जिसमें परीक्षार्थियों का निरीक्षण किया जाता है तथा निर्धारित योजना के अनुसार विभिन्न

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

स्टेशनों पर घूमते हुए उन्हें अंक दिए जाते हैं। इस्मे आठ पी है। प्रदर्शन मूल्यांकन, प्रक्रिया और उत्पाद, शिक्षार्थी का प्रोफाइल, शिक्षार्थी की प्रगति, सार्वजनिक मूल्यांकन, कर्मचारियों की भागीदारी, परिवर्तन के लिए दबाव और क्षमता का वर्तमान मानक।

उन्होंने ओ.एस.पी.ई. के बारे में बताया कि यह स्वास्थ्य विज्ञान पाठ्यक्रम के प्रीक्लिनिकल चरण में छात्रों के प्रयोगशाला कौशल का आकलन करने के लिए बुनियादी चिकित्सा विज्ञान के व्यावहारिक मूल्यांकन में एक नई अवधारणा है। कौशल का परीक्षण संज्ञानात्मक, मनोवैज्ञानिक, व्याख्या, विश्लेषण द्वारा किया जाना चाहिए।

आयोजन के लिए कुछ सावधानियाँ इस प्रकार है जैसे यह परीक्षा की तिथि से 6 से 8 सप्ताह पहले तैयार रहना चाहिए, सभी स्तरों पर कर्मचारियों की समन्वित गतिविधि होनी चाहिए तथा इसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए। ओ.एस.सी.ई. और ओ.एस.पी.ई. के बीच कुछ अंतर इस प्रकार हैं। ओ.एस.सी.ई. नैदानिक मूल्यांकन है, जो वास्तविक रोगी पर किया जाता है, हम रोगी के इतिहास संग्रह और निदान की जांच कर सकते हैं तथा ओ.एस.पी.ई. का उपयोग व्यावहारिक या तकनीकी कौशल की जांच के लिए किया जाता है, जिससे मनोप्रेरक कौशल का मूल्यांकन किया जा सकता है। इसके बाद मिस एनी निर्मला (कार्यक्रम अधिकारी जापेइगो) के माध्यम से ओएससीई/ओएसपीई और के घटकों के बारे में जानकारी दी गई जैसा की परीक्षा समन्वय समिति, परीक्षा समन्वयक, मूल्यांकन किए जाने वाले कौशल, व्यवहार और दृष्टिकोण की सूची, मूल्यांकन के लिए अंक देने के मानदंड और अन्य घटक जैसे की परीक्षक, परीक्षार्थी, परीक्षा स्थल, परीक्षा स्टेशन रोगी मानकीकृत या अनुकरणीय, समयपालक, समय घड़ी और समय संकेत, आकस्मिक योजना, ओ.एस.सी.ई. के प्रदर्शन का आकलन, परीक्षक की भूमिका और ओएससीई से पहले और ओएससीई के दौरान आ ओएससीई के बाद क्या करना चाहिए आदि विषय पर जानकारी दी।

ओएससीई डिज़ाइन करने वाले चर जैसे कि स्टेशन की संख्या, प्रत्येक स्टेशन के लिए आवंटित समय की लंबाई, सर्किट की संख्या, प्रक्रिया और प्रश्न स्टेशन का उपयोग, डबल और लिंक्ड स्टेशनों का उपयोग, स्टेशन का संगठन एक सर्किट में और परीक्षार्थी को फीडबैक का प्रावधान इसके बाद ओएससीई और ओएसपीई का कार्यान्वयन, परीक्षार्थी के प्रदर्शन का मूल्यांकन और प्रतिक्रिया प्रदान करना वगैरह।

कैडेवर : शपथ ग्रहण

श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर

कैडेवर शपथ ग्रहण आयोजन में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. भाबतोष विश्वास एवं डॉ. जी.एन. सिंह

दिनांकः 08 फरवरी, 2025। द वेस्ट बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ़ हेल्थ साइंसेज कोलकाता के पूर्व कुलपति और सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय कोलकाता के एमिरेट्स प्रोफेसर, सीनियर हार्ट सर्जन डॉ. भावतोष विश्वास ने कहा कि कैडेवर (शव या मृत मानव शरीर) मेडिकल विद्यार्थियों का प्रथम गुरु होता है। इस गुरु के सामने ही शपथ लेकर चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थी चिकित्सा क्षेत्र की अपनी ज्ञान यात्रा शुरू करते हैं।

प्रो. भावतोष विश्वास शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए आयोजित कैडेवरिक ओथ सेरेमनी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर एमबीबीएस प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को मेडिकल कॉलेज के शरीर रचना विभाग के विच्छेदन कक्ष में मानव शरीर (कैडेवर) को प्रथम गुरु मानने की पारंपरिक शपथ दिलाई गई। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्रो. भावतोष ने कहा कि कैडेवरिक ओथ के साथ ही चिकित्सा विज्ञान के नए छात्रों की प्रायोगात्मक कक्षाएं भी प्रारंभ हो गई हैं। उन्होंने कहा कि कैडेवर की आपने पूजा की है इसलिए इस गुरु के प्रति सदैव सम्मान का भाव रखें।

इस कैडेवर से आपको मानव शरीर की रचना के वैज्ञानिक अध्ययन का अवसर मिल रहा है। यह अध्ययन आपको भविष्य में मानवता की सेवा करने वाला सुयोग्य चिकित्सक बनाएगा।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक एवं यूपी के मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. जी. एन. सिंह ने कहा कि मेडिकल कॉलेज को मिले कैडेवर को शव मात्र समझने की भूल नहीं होनी चाहिए।

ये कैडेवर चिकित्सकीय ज्ञान प्राप्त करने महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इनके अध्ययन का अनुभव हासिल करना चिकित्सा विज्ञान के छात्रों के लिए अनिवार्य और अपरिहार्य है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने

एमबीबीएस छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज से आपकी व्यवहारिक शिक्षा भी प्रारंभ हो रही है।

उन्होंने बताया कि मेडिकल कॉलेजों को जहां एक कैडेवर हासिल करना कठिन होता है वहीं इस मेडिकल कॉलेज के एमबीबीएस स्टूडेंट्स को व्यवहारिक अध्ययन के लिए सात कैडेवर उपलब्ध हैं।

शव शपथ कार्यक्रम में शरीर रचना विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रियंका सिंह ने कहा कि कैडेवरिक ओथ देहदान के पश्चात देह को गुरु मानकर उनके सम्मान में एमबीबीएस छात्रों द्वारा ली जाने वाली पारम्परिक शपथ को कहते हैं। उन्होंने मेडिकल के छात्रों को देहदान करने वाले व्यक्ति के पार्थिव शरीर को सर्वोच्च सम्मान के साथ व्यवहार करने, मृतक व उनके परिवार के प्रति जीवन पर्यन्त आभार की अनुभूति रखने तथा इस महान बलिदान से अर्जित ज्ञान से समाज की सेवा करने की शपथ दिलाई। उन्होंने, शव को विच्छेदित करते समय क्या–क्या सावधानियां रखनी है, इससे भी अवगत कराया।

इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार रावए श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा, नर्सिंग संकाय की प्राचार्या एवं हॉस्पिटल इंचार्ज डॉ. डी.एस. अजीथा समेत कई विभागों के प्रमुख, शिक्षक और एमबीबीएस के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहें।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

राष्ट्रीय सेवा योजना

वाद–विवाद प्रतियोगिता के दौरान उपस्थित प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थीगण

दिनांकः 08 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के राष्ट्रीय सेवा योजना एनएसएस की आर्यभट इकाई एवं शिवाजी इकाई के संयुक्त तत्वावधान में वाद–विवाद प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया।

इस प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के विभिन्न विभागों के स्वयसेवकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने विचारों की उत्कृष्ट प्रस्तुति दी प्रतियोगिता का विषय विन्दु 'बजट–2025' था। जिस पर आर्यभट इकाई के स्वयंसेवक प्रतिभागियों ने पक्ष में एवं शिवाजी इकाई के स्वयंसेवक विपक्ष में अपने तर्क प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों ने अपनी प्रभावशाली वक्तृत्व शैली, तार्किक क्षमता और सटीक तथ्यों के साथ दर्शकों एवं निर्णायक मंडल को प्रभावित किया।

कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती रश्मि झा ने वाद–विवाद प्रतियोगिताओं के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों में तार्किक क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल और आत्मविश्वास को विकसित करती हैं। निर्णायक मंडल में. श्री बलदेव प्रसाद विश्वकर्मा, श्री अनिरुद्ध सेन, श्री सुमित शामिल रहे, जिन्होंने प्रतिभागियों के प्रस्तुतीकरण, तर्कशीलता एवं विषय की गहराई को ध्यान में रखते हुए परिणाम घोषित किया। प्रतियोगिता में शिवाजी को प्रथम स्थान, आर्यभट्ट को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

अंत में, कार्यक्रम अधिकारी श्री अनिल कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए सभी प्रतिभागियों, अतिथियों एवं आयोजन समिति के सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रश्मि झा ने किया, यह आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना की भावना को सशक्त बनाने और युवाओं में जागरूकता एवं नेतृत्व क्षमता विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। कार्यक्रम में प्रो. सुनील सिंह अधिष्ठाता सम्बध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय, श्री रवि निषाद, श्री जनमेजय सोनी, श्री श्रृष्टि यदुवंशी, श्री वात्स्य त्रिवेदी उपस्थित रहें।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल

वर्कशॉप में डेलिगेट्स को जानकारी देते हुए डॉ. अन्नापुमा रेड्डी एवं सेमुलेशन प्रक्रिया की जानकारी लेते डेलिगेट्स

दिनांकः 08 फरवरी, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में 'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई. वर्कशॉप का आयोजन किया गया था। जिसका मुख्य थीमः 'ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रैक्टिस' रहा।

आज 8 फरवरी 2025 को इस कार्यक्रम का अंतिम दिन रहा जिसको सिमुलेशन और ओ.एस.सी.ई. पर कार्यशाला का समापन के रूप में मनाया गया।

कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में सम्माननीय अतिथि डॉ. अन्नापुमा रेड्डी (उप नर्सिंग अधीक्षक, इंटीग्रल अस्पताल, आई.आई.एम.एस.आर., लखनऊ), डॉ. नीतू देवी (नर्सिंग सलाहकार, यूपीएसएमएफ), डॉ. मोनिका रीटा हेंड्रिक्स (स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर, जाइपाइगो), सुश्री एनी निर्मला (प्रोग्राम ऑफिसर, जाइपाइगो), डॉ. डी. एस. अजीथा (प्राचार्य, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय, एम.जी.यू. जी), श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज (उप. प्राचार्य, एम.जी.यू.जी.) उपस्थित था।

कार्यक्रम में आये हुए माननीय अतिथियों को नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के प्राचार्य डॉ. डी. एस. अजीथा द्वारा दिए गए स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ की गई, सम्माननीय अतिथि डॉ. अन्नापुमा रेड्डी (उप नर्सिंग अधीक्षक, इंटीग्रल अस्पताल, आई.आई.एम.एस.आर., लखनऊ) ने क्लीनिकल क्षमता का मूल्यांकनः नर्सिंग अनुसंधान और शिक्षा में ओ.एस.सी.ई. की महत्वपूर्ण भूमिका पर जानकारी दी।

उन्होंने इस संबंध में जानकारी दीया की क्लीनिकल क्षमता स्वास्थ्य पेशेवरों की रोगी देखभाल, नैदानिक निर्णय और व्यावसायिक कौशल की दक्षता को दर्शाती है। ओएससीई एक मानकीकृत परीक्षा पद्धति है, जो छात्रों की व्यावहारिक और नैदानिक दक्षता का निष्पक्ष मूल्यांकन करती है। मिलर के क्लीनिकल क्षमता प्रिज़्म के अनुसार, दक्षता चार स्तरों में विभाजित होती है। ओएससीई को लागू करने के लिए परीक्षा उद्देश्यों की योजना, केस स्केनरीओ और चेकलिस्ट निर्माण, परीक्षकों का प्रशिक्षण और फीडबैक प्रणाली आवश्यक होती है। भारत में इसे लागू करने में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित परीक्षकों की आवश्यकता और उच्च लागत जैसी चुनौतियाँ हैं। इसके बावजूद, यह एक विश्वसनीय प्रणाली है जो छात्रों की व्यावहारिक तैयारी को बेहतर बनाती है, रोगी सुरक्षा को बढ़ाती है और नर्सिंग शिक्षा में मानकीकृत मूल्यांकन को सक्षम बनाती है।

नर्सिंग अनुसंधान में ओएससीई का उपयोग क्लिनिकल कौशल के सत्यापन, पाठ्यक्रम विकास और मूल्यांकन प्रक्रिया को मजबूत करने में किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों के ज्ञान में सुधार का आकलन करने के लिए उन्हें कुछ प्रश्न दिए। अंत में विभिन्न नर्सिंग कॉलेज से आए सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला के संबंध में अपने अनुभव साझा किए तथा डॉ. डी. एस. अजीथा (प्राचार्य, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय, एम.जी.यू.जी.) ने

'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई' वर्कशॉप

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज

कार्यशाला के समापन सत्र में प्रतिभागियों को सम्बोधित करतीं डॉ. डी. एस. अजीथा एवं डॉ. नीतू देवी

दिनांकः 09 फरवरी, 2025 को फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालयए गोरखपुर, उत्तर प्रदेश में 'सिमुलेशन एवं ओ.एस.सी.ई. वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य थीमः 'ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रैक्टिस' रहा।

आज 09 फरवरी 2025 को इस कार्यक्रम का अंतिम दिन रहा जिसको सिमुलेशन और ओ.एस.सी.ई. पर कार्यशाला का समापन के रूप में मनाया गया।

कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रूप में सम्माननीय अतिथि डॉ. अन्नापुमा रेड्डी (उप नर्सिंग अधीक्षक, इंटीग्रल अस्पताल, आई.आई.एम.एस.आर, लखनऊ, डॉ. नीतू देवी (नर्सिंग सलाहकार, यूपीएसएमएफ), डॉ. मोनिका रीटा हेंड्रिक्स (स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर, जाइपाइगो) सुश्री एनी निर्मला (प्रोग्राम ऑफिसर, जइपाइगो) डॉ. डी. एस. अजीथा, प्राचार्य, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय, एम.जी.यू.जी.), श्रीमती प्रिंसी जॉर्ज (उप.प्राचार्य, एम.जी. यू. जी.) उपस्थित थे।

कार्यक्रम में आये हुए माननीय अतिथियों को नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय के प्राचार्य डॉ. डी. एस. अजीथा द्वारा दिए गए स्मृति चिन्ह द्वारा सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्वलन के साथ की गई। सम्माननीय अतिथि डॉ. अन्नापुमा रेड्डी (उप नर्सिंग अधीक्षक, इंटीग्रल अस्पताल, आई.आई.एम. एस.आर., लखनऊ) ने क्लीनिकल क्षमता का मूल्यांकनः नर्सिंग अनुसंधान और शिक्षा में ओ.एस.सी.ई. की महत्वपूर्ण भूमिका पर जानकारी दी।

उन्होंने इस संबंध में जानकारी दीया की क्लीनिकल क्षमता स्वास्थ्य पेशेवरों की रोगी देखभाल, नैदानिक निर्णय और व्यावसायिक कौशल की दक्षता को दर्शाती है। ओएससीई एक मानकीकृत परीक्षा पद्धति है, जो छात्रों की व्यावहारिक और नैदानिक दक्षता का निष्पक्ष मूल्यांकन करती है। मिलर के क्लीनिकल क्षमता प्रिज़्म के अनुसार, दक्षता चार स्तरों में विभाजित होती है। ओएससीई को लागू करने के लिए परीक्षा उद्देश्यों की योजना, केस स्केनरीओ और चेकलिस्ट निर्माण, परीक्षकों का प्रशिक्षण और फीडबैक प्रणाली आवश्यक होती है। भारत में इसे लागू करने में संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित परीक्षकों की आवश्यकता और उच्च लागत जैसी चुनौतियाँ हैं। इसके बावजूद, यह एक विश्वसनीय प्रणाली है जो छात्रों की व्यावहारिक तैयारी को बेहतर बनाती है, रोगी सुरक्षा को बढ़ाती है और नर्सिंग शिक्षा में मानकीकृत मूल्यांकन को सक्षम बनाती है। नर्सिंग अनुसंधान में ओएससीई का उपयोग क्लिनिकल कौशल के सत्यापन, पाठ्यक्रम विकास और मूल्यांकन प्रक्रिया को मजबूत करने में किया जाता है। उन्होंने प्रतिभागियों के ज्ञान में सुधार का आकलन करने के लिए उन्हें कुछ प्रश्न दिए। अंत में विभिन्न नर्सिंग कॉलेज से आए सभी प्रतिभागियों ने कार्यशाला के संबंध में अपने अनुभव साझा किए तथा डॉ. डी. एस. अजीथा (प्राचार्य, नर्सिंग और पैरामेडिकल संकाय, एम.जी.

एक दिवसीय जागरूकता शिविर

राष्ट्रीय सेवा योजना

एक दिवसीय जागरूकता शिविर के दौरान साफ–सफाई करते स्वयंसेवक

दिनांकः 13 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के राष्ट्रीय सेवा योजना की माता शबरी इकाई द्वारा द्वितीय एक दिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन, गांव–गांव पहुंचे 'दवा मित्र' गोरखपुर, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की माता शबरी इकाई (फार्मास्युटिकल विज्ञान संकाय) के स्वयंसेवकों ने समाज को स्वस्थ और जागरूक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इकाई के तत्वावधान में दिनांक 13.02.2025 को ग्राम सभा सोनबरसा में एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में स्वयंसेवकों ने ग्रामीणों को विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर जागरूक किया और 'दवा मित्र' के रूप में घर–घर जाकर सर्वे भी किया।

एच.आई.वी. उन्मूलनः स्वयंसेवकों ने ग्रामीणों को एच. आई.वी. / एड्स के कारण, बचाव और उपचार के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने इस बीमारी से जुड़े मिथकों को दूर करने और जागरूकता बढ़ाने पर जोर दिया।

चेचक उन्मूलनरू चेचक के खतरे और इसके टीकाकरण के महत्व पर प्रकाश डाला गया। ग्रामीणों को बताया गया कि कैसे टीकाकरण से इस घातक बीमारी से बचा जा सकता है।

नशा मुक्तिः नशीले पदार्थों के सेवन के दुष्प्रभावों के बारे में ग्रामीणों को अवगत कराया गया। युवाओं को नशाखोरी से दूर रहने के लिए प्रेरित किया गया और नशा मुक्ति केंद्रों के बारे में जानकारी दी गई।

स्वच्छताः स्वच्छता के महत्व पर बल देते हुए ग्रामीणों को अपने आसपास के वातावरण को साफ रखने के लिए प्रेरित किया गया। उन्हें बताया गया कि स्वच्छता से कई बीमारियों से बचा जा सकता है।

मलेरिया एवं डेंगू उन्मूलनः मलेरिया और डेंगू के मच्छरों के प्रजनन स्थलों को नष्ट करने और इन बीमारियों से बचाव के तरीकों के बारे में जानकारी दी गई। ग्रामीणों को मच्छरदानी के उपयोग और साफ पानी जमा न होने देने के बारे में बताया गया।

इस शिविर में 'दवा मित्र' की एक नई अवधारणा प्रस्तुत की गई। स्वयंसेवकों ने गांव के प्रत्येक घर में जाकर परिवारों से उपरोक्त बीमारियों के बारे में बातचीत की और उनका सर्वे किया।

उन्होंने ग्रामीणों को बीमारियों के लक्षणों, उपचार और बचाव के बारे में जानकारी दी। :दवा मित्र' के रूप में, स्वयंसेवकों ने ग्रामीणों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए सही मार्गदर्शन भी दिया।

इस शिविर में इकाई के स्वयंसेवकों ने ग्राम स्थल पर स्वच्छता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए स्वच्छता अभियान चलाया।

कार्यक्रम अधिकारी डॉ. अभिषेक कुमार सिंह ने बताया कि इस शिविर का उद्देश्य ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना और उन्हें बीमारियों से बचाव के लिए सही जानकारी देना था। उन्होंने कहा कि 'दवा मित्र' की पहल के माध्यम से ग्रामीणों तक स्वास्थ्य संबंधी जानकारी पहुंचाने में मदद मिलेगी। उन्होंने स्वयंसेवकों के प्रयासों की सराहना की और भविष्य में भी इस तरह के जागरूकता अभियान चलाने की बात कही।

इस शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों एवं स्वयंसेवक में चंदन यादव, आदित्य यादव, सूरज यादव इत्यादि ने भाग लिया और स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त की। ग्रामीणों ने स्वयंसेवकों के प्रयासों की सराहना की और उन्हें धन्यवाद दिया। इस तरह के जागरूकता अभियान समाज को स्वस्थ और जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

आरोग्य पथ
मासिक ई-पत्रिका

'50 मिनट 50 साल' : अतिथि व्याख्यान

कृषि संकाय

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. रामचेत चौधरी

दिनांकः 15 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय में '50 मिनट 50 साल' के विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में पद्मश्री डॉ. रामचेत चौधरी उपस्थित रहें।

डॉ. चौधरी ने कृषि विज्ञान में शोध व अनुसंधान क्षेत्र के अपने अनुभव को साझा करते हुए छात्रों को कृषि में हुए नवाचार और क्रांतिकारी परिवर्तनों से अवगत कराया। उन्होंने अमेरिका, कंबोडिया, म्यांमार, अफ्रीका, मलावी और अफगानिस्तान समेत 104 देशों में वर्ल्ड बैंक, फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन, इरी व अनेकों प्रतिष्ठित संस्थाओं में अपने शोध कार्य से कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता व खाद्य निर्यात में सक्षम बनाने में अपनी अमूल्य भूमिका निभाई।

कालानमक चावल को आधुनिक कृषि का क्रांतिकारी प्रयास बताते हुए उसकी आर्थिक उपयोगिता व किसानों को उससे होने वाले लाभ का विस्तृत वर्णन किया। हरित क्रांति के जनक भारत रत्न डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन के साथ किये गए कार्यों के अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने कहा की इरी जैसे संस्थाओं के सहयोग से, कम्बोडिया, फिलीपीन्स जैसे छोटे देशों ने कृषि पर अपनी निर्भरता से अपने आर्थिक विकास को प्रगति दी है। पद्म श्री से सम्मानित रामचेत चौधरी जी को 14 अन्य राष्टीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया। डॉ. चौधरी ने विश्वविद्यालय के साथ मिलकर भविष्य में सुनहरी शकरकंदी के उत्पादन पर कार्य करने का प्रस्ताव रखा जो को विटामिन डी की कमी से होने वाली बीमारियों के निवारण में सहायक होगा।

कार्यक्रम का संचालन स्नातक कृषि विज्ञान तृतीय वर्ष की छात्रा खुशी गुप्ता व अदिति सिंह ने एवं आभार ज्ञापन अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे द्वारा किया गया।

इस दौरान सह आचार्य डॉ. विनम्र शर्मा, सहायक आचार्य डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. विकास कुमार यादव, डॉ. आयुष कुमार पाठक, डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी, डॉ. नवनीत सिंह, श्री दिलीप पांडेय, सुश्री श्रेया मद्धेशिया एवं कृषि व फार्मेसी संकाय के समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहें।

शैक्षणिक भ्रमण

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

दिनांकः 15 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के बी.एस.सी. बॉयोटेक्नोलॉजी के 120 छात्र एवं छात्राओं ने भारत एवं उत्तर प्रदेश सरकार के नेतृत्व में नदियों के स्वछता अभियान में 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत गोरखपुर नगर निगम के द्वारा रेगुलेटर नंबर 4, 5, 6 व 7 एवं इलाहीबाग रेगुलेटर से तकियाघाट होते राप्ती नदी में गिरने वाले नालों का प्राकृतिक विधि से चल रहे जल सोधन के कार्य को नजदीक से जानने और समझने के लिए शैक्षणिक भ्रमण किया।

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण में विद्यार्थियों ने पर्यावरण को बचाने का संकल्प लिया है। प्लांट में बिना किसी केमिकल का इस्तेमाल कैसे प्राकृतिक रूप से फाइटोरेमेडिएशन की मदद से शोधन किया जा सकता है। इसके लिए प्रोजेक्ट के माध्यम से विद्यार्थीयो में शोध दृष्टि विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रोजेक्ट को शुरु करने में प्रो. सी.आर. बाबू की अहम् भूमिका रही है। यह शैक्षणिक भ्रमण संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह एवं जैव प्रौद्योगिकी के विभागाध्यक्ष डॉ. अमित कुमार दुबे, के नेतृत्व में

डॉ. पवन कुमार एवं डॉ. अवैद्य नाथ सिंह ने सम्पादित किया। भ्रमण में गोरखपुर नगर निगम के अधिशाषी अभियंता श्री शैलेश कुमार, प्रभारी अनुराग श्रीवास्तव, जोनल अधिकारी नारदेश्वर पाण्डेय, जूनियर इंजीनियर रंजीत कुमार, फयतोरेमीडिएशन के विशेषज्ञ मुरारी बाबू ने प्राकृतिक रूप से चल रहे जल शोधन कार्य साइट का विद्यार्थियों को भ्रमण कराया।

शैक्षणिक भ्रमण — कृषि संकाय

‘क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र’ गोरखपुर में कृषि संकाय के विद्यार्थी

दिनांकः 15 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय के तृतीय वर्ष के छात्रों ने ‘क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान केंद्र’ गोरखपुर का शैक्षणिक भ्रमण किया।

इस दौरान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. गौरव राज द्विवेदी ने छात्रों को केंद्र की स्थापना, उपलब्धियां व शोध कार्यक्षेत्र से अवगत करवाया और कृषि व स्वास्थ्य संबंधित समस्याओं के निवारण हेतु अनुसंधान पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

विद्यार्थियों ने वहां इंसेक्टरी, माइक्रोबायोलॉजी, मॉलिक्युलर बायोलॉजी, सीरोलॉजी एनेक्स्ट जनरेशन सीक्वेंसिंग, वायरल रिसर्च एंड डायग्नोस्टिक प्रयोगशालाओं का भ्रमण कर उनकी कार्यशैली को समझा।

छात्रों ने रोग संचरण में वाहक कीटों के जीवन चक्र के साथ डीएनए एक्सट्रैक्शन, पीसीआर जैसी उन्नत तकनीकों पर विस्तृत अध्ययन किया।

शैक्षणिक भ्रमण कृषि संकाय कीट विज्ञान की सहायक आचार्य डॉ. शाश्वती प्रेमकुमारी के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

भ्रमण में प्रमुख रूप से वैज्ञानिक डॉ. बृज रंजन मिश्रा, डॉ. राजीव सिंह, डॉ. आयुष, डॉ. एसपी बेहरा, डॉ. नीरज, डॉ. अमन अग्रवाल एवं स्नातक कृषि विज्ञान तृतीय वर्ष के समस्त छात्र–छात्राएं उपस्थित रहें।

अतिथि व्याख्यान — गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

अतिथि व्याख्यान के दौरान विद्यार्थियों को सम्बोधित करती डॉ. सुनीता श्रोतरिया

दिनांकः 18 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) के द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन हुआ, व्याख्यान के लिए Ashford and St.Peters Hospital U.K. से डॉ. सुनीता श्रोतरिया मैनेजमेंट ऑफ ब्रेस्ट कैंसर अर्ली डायग्नोसिस एंड ट्रीटमेंट विषय के साथ उपस्थित थी।

उन्होंने व्याख्यान में ब्रेस्ट कैंसर को महिलाओं को प्रभावित करने वाला सबसे आम कैंसर बताया है। उन्होंने इसके लक्षणों, जांच प्रक्रियाओं और उपचार विकल्पों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. सुनीता श्रोत्रिया ने कैंसर के सटीक कारण को पहचानने में मुश्किल को रेखांकित किया, लेकिन Risk Factor को समझने के महत्व पर जोर दिया।

उन्होंने Scarless Breast Surgery की अवधारणा की शुरुआत की, जिसमें Peri areolar incision एक नए युग की शुरुआत के रूप में प्रस्तुत किया गया।

महोदया ने यह भी बताया कि जल्दी निदान और कुशल प्रबंधन से सर्जरी की आवश्यकता को रोका जा सकता है। उन्होंने सर्जिकल प्रथाओं में सुश्रुत आचार्य के योगदान को भी याद किया। डॉ. सुनीता श्रोत्रिया की भविष्य की दृष्टि में रोगी–केंद्रित देखभाल पर बल दिया गया है, जो रोगियों की जरूरतों और चिंताओं को संबोधित करने वाले आविष्कारों को प्रोत्साहित करती है। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि रोगियों के साथ व्यक्तिगत संबंध

उनके उपचार परिणामों पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं।

व्याख्यान सत्र का धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के रोगनिदान एवं विकृति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपीकृष्ण आचार्य जी ने किया।

व्याख्यान सत्र में सम्बद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति, आयुर्वेद विभाग संकाय, फार्मेशी संकाय, नर्सिंग के प्रमुख एवं छात्र छात्रा भी उपस्थित थें।

शैक्षणिक भ्रमण

कृषि संकाय

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान मधुमक्खी पालन एवं प्रबंधन के जानकारी लेते विद्यार्थी

दिनांकः 19 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित कृषि संकाय के तृतीय वर्ष में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थियों ने पीपीगंज स्थित "हाई ग्रोथ हनी बी.फार्म" गोरखपुर का शैक्षिक भ्रमण किया।

विद्यार्थियों ने मधुमक्खी पालन एवं प्रबंधन के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की। भ्रमण के दौरान हनी बी.फार्म के संचालक श्री राजू सिंह ने महत्त्वपूर्ण जानकारी देते हुए वहाँ के अत्याधुनिक मशीन व प्रसंस्करण इकाई, मधुमक्खी छत्ता, केन्द्रीय छत्ता, फेम फीडर्स, इक्सक्लूडर, शहद निष्कर्षण, रानी मधुमक्खी पालन किट, काम्ब फाउंडेशन सीट इत्यादि सम्पूर्ण मधुमक्खी पालन में उपयोग होने वाले उपकरणों के महत्व के बारे में जानकारी दी। साथ ही साथ शहद को इकट्ठा करने की तकनीक, मानक के अनुसार शहद के गुणवत्ता की जाँच–परख, पैकिंग व मार्केटिंग के गुण को भी समझाया।

कृषि संकाय में सहायक आचार्य डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी ने कृषि में मधुमक्खियों की उपयोगिता को समझाते हुए मधुमक्खियों द्वारा फसलों में पर–परागण से कृषि उपज में बढ़ोतरी, फसल संवर्धन एवं पादप आनुवांशिक संसाधनों के संरक्षण में उनकी भूमिका के महत्व को विद्यार्थियों के साथ साझा किया।

इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को मधुमक्खी पालन की विधा को समझने व उसके व्यावसायिक लाभ व हानि की जानकारी प्राप्त करवाना था। शैक्षणिक भ्रमण कृषि संकाय अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे के मार्गदर्शन से सम्पन्न हुआ।

अतिथि व्याख्यान

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

अतिथि व्याख्यान में विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. हरनारायण दे

दिनांकः 22 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर अंतर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में संहिता सिद्धांत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित अतिथि व्याख्यान कार्यक्रम में अष्टांग योग पर अपने विचार व्यक्त करते हुए आईटीएम आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. हरनारायण दे ने कहा कि जो निरंतर गतिमान है, चेतना युक्त है, शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा से संयुक्त है उसे आयु कहते हैं। ऐसा चरक, सुश्रुत आदि ऋषियों ने बताया है।

सभी दोष, अग्नि, धातु और मल और क्रियाएं, संतुलित अवस्था में हों और मन, इन्द्रिय और आत्मा प्रसन्न हो तो ऐसा व्यक्ति स्वस्थ कहा जाता है। अपने चित्त अर्थात मन का नियंत्रण ही योग है। योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं।

अपने को नियंत्रित रखना ही यम कहलाता है। हिंसा न करना, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य धारण करना, कायिक, मानसिक, वाचिक कोई भी पाप न करना ही यम के अन्तर्गत आता है।

मन चाकर है आत्मा स्वामी इसलिए अपने को हमेशा अपने नियंत्रण में रखकर जो सम्यक आहार विहार ग्रहण करता है वो स्वस्थ रहता है। आयुर्वेद का प्रयोजन ही स्वस्थ को स्वस्थ

रखना और रोगी को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कराना है।

कार्यक्रम में डॉ. शान्ति भूषण और आचार्य साध्वी नन्दन ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह और गुरु गोरक्षनाथ जी से सम्बन्धित ग्रन्थों को भेंट कर सम्मानित किया। डॉ. मिनी के. वी. महोदया ने मुख्य अतिथि और सभी शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट किया।

कार्यक्रम में डॉ. शान्ति भूषण, डॉ मिनी के वीए कार्यक्रम अधिकारी डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. सुमित कुमार एम., डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. देवी और सभी विद्यार्थी उपस्थित रहें।

अतिथि व्याख्यान

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए प्रो. (डॉ.) अब्दूल करीम एच

दिनांकः 22 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर अंतर्गत संचालित गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (आयुर्वेद संकाय) के रसाशास्त्र एवं भैषज्य विभाग द्वारा विद्यार्थियों को कूपी पक्व रसायन के प्रायोगिक दृष्टिकोण के विषय पर एक उपन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जिसमें अतिथि वक्ता के रूप में प्रो. (डॉ) अब्दूल करीम एच., उप प्राचार्य, आई.टी.एम. आयुर्वेद कॉलेज महाराजगंज उपस्थित रहे। उन्होंने आयुर्वेद के रसाशास्त्र का विशेष औषधि की निर्माण विधि को विस्तृत रूप से वर्णन किया तथा आवश्यक जानकारियों को विद्यार्थियों के साथ साझा किया।

कार्यक्रम में कॉलेज के आचार्य डॉ. नवीन कोडलाडी, विभागाध्यक्ष (रसाशास्त्र एवं भैषज्य विभाग) अध्यक्षीय भाषण में विशेष औषधि की निर्माण का आधूनिक एवं शास्त्रीय विधान के बारे में जानकारी देते हुए अतिथि वक्ता प्रो. (डॉ.) अब्दूल करीम एच. का अभिन्दन किया। डॉ. चौतन्या बी. जी के माध्यम से धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम का समापन किया। कार्यक्रम में डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. अभिजित सहित समस्त शिक्षणगण एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें।

दो दिवसीय सीएमई 'ग्लूकोमा प्रयोगशाला

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल संकाय

दो दिवसीय सीएमई 'ग्लूकोमा प्रयोगशाला में पैरामेडिकल संकाय के प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

दिनांकः 22 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल संकाय में संचालित डिपार्टमेंट ऑफ ऑप्टोमेट्री के कुल 35 छात्रों ने श्री राम मूर्ति स्मारक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयोजित 2 दिवसीय सीएमई 'ग्लूकोमा प्रयोगशाला' में प्रतिभाग लिया।विद्यार्थियों के साथ विश्वविद्यालय के दो शिक्षक कुंवर अभिनव सिंह राठौर व सुश्री सुप्रिया गुप्ता ने भी प्रतिभाग लिया। 'श्रीराम मूर्ति मेडिकल कॉलेज' के अंतर्गत संचालित 'ऑप्थाल्मोलॉजी विभाग' की विभागाध्यक्ष डॉ. नीलिमा मेहरोत्रा द्वारा ग्लूकोमा व उससे होने वाली तमाम दिक्कतों के बारे में जानकारी साझा किया साथ ही ग्लूकोमा एक्सपर्ट्स द्वारा थेरेपीज के बारे में जानकारी साझा किया।

सूरजमल कॉलेज ऑफ पैरामेडिकल साइंसेज के प्रधानाचार्य डॉ .इमरान अहमद अंसारी द्वारा एप्पलेनेशन टोनामीट्री द्वारा जांच करने की विधि व उसके फायदों के बारे में जानकारी साझा की।

विद्यार्थियों के लिए यह एक नया और सुखद अनुभव रहा। इस पूरे आयोजन को सफल बनाने में 'महायोगी विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ पैरामेडिकल साइंसेज के विभागाध्यक्ष डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव की मुख्य भूमिका रही।

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर

महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र

निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर में मरीजों की जांच करते चिकित्सक

दिनांकः 24 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, गोरखपुर में पीएम किसान सम्मान निधि के 6 वर्ष पूरे होने तथा योजना की 19 वीं किस्त वितरण होने के उपलक्ष्य में माननीय प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में भागलपुर, बिहार में आयोजित किसान सम्मान समारोह कार्यक्रम का प्रसारण दिनांक 24 फरवरी 2025 को किया गया।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा 10000 किसान उत्पादक संगठनो को राष्ट्र को समर्पित किया गया। मोतिहारी में स्वदेशी नस्लों के लिए उत्कृष्टता केंद्र एवं बरौनी में दुग्ध उत्पादन संयंत्र का उद्घाटन भी किया गया।

इस कार्यक्रम का भव्य आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र के प्रशिक्षण भवन में किया गया। साथ ही किसान बंधुओं के लिए कृषि प्रदर्शनी एवं जानकारी के लिए गोष्ठी तथा महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र व महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान आयोजित निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें 375 बच्चों, महिलाओं एवं पुरुषों की निःशुल्क जांच की गई तथा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के चिकित्सालय की तरफ से निःशुल्क दवाई का वितरण भी किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कैंपियरगंज विधायक प्रतिनिधि श्री मनोज कुमार सिंह उपस्थित रहे साथ ही प्रिंसिपल, नर्सिंग कॉलेज, डॉ. अजीथा, डायरेक्टर डॉ. राजीव कुमार पथनी, इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय तथा केंद्र से डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव, डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय, डॉ. श्वेता सिंह, डॉ. विवेक प्रताप सिंह, श्री अवनीश कुमार सिंह, श्री आशीष सिंह, श्री जितेंद्र सिंह, श्री गौरव सिंह सहित

स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम

नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के दौरान प्राथमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं को जागरूक करतीं नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 27 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत बेसिक बी. एस.सी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष के कुल 30 छात्राओं ने चार शिक्षिकाओं (मिस खुशबू, मिस समरीन, मिस अभ्या प्रजापति, मिस श्रद्धा) के मार्गदर्शन में जंगल कौड़िया, गोरखपुर में स्थित प्राथमिक विद्यालय (घुरवा टोला) में व्यक्तिगत स्वच्छता पर स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें कक्षा 5 तक के

छात्र–छात्राएं उपस्थित थे, छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक एवं चार्ट प्रस्तुति के मध्यम से व्यक्तिगत स्वच्छता का हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर कितना महत्व है इसके बारे में जानकारी दी। जिसमें कुछ मुख्य बिन्दु जैसे–हाथ धोना, दांतों की देखभाल, रोजाना नहाना, नाखूनों को सही तरीके से काटना, योग और ध्यान करना आदि शामिल थे।

उन्होंने बताया की यह न केवल हमें बीमारियों से बचाता है, बल्कि आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है। हाथों की सफाई के लिये हाथों को साबुन और पानी से कम से कम 20 सेकंड तक धोना चाहिए। यदि साबुन और पानी उपलब्ध न हों, तो अल्कोहल–आधारित हैं, सैनिटाइज़र का उपयोग किया जा सकता है।

दांतों की सफाई के लिये दांतों को दिन में कम से कम दो बार (सुबह और रात) अच्छे तरीके से ब्रश करें तथा दांतों के स्वास्थ्य के लिए नियमित रूप से डेंटिस्ट के पास जाना चाहिए। शरीर की सफाई के लिये रोज़ाना स्नान करना महत्वपूर्ण होता है। त्वचा की स्वच्छता बनाए रखने के लिए सही प्रकार के साबुन और शैम्पू का उपयोग करें, नाखूनों की सफाई के लिये नाखूनों को नियमित रूप से काटें और साफ रखें। लंबे नाखूनों में गंदगी जमा हो सकती है जो बीमारियों का कारण बन सकती है। साफ और ताजे खाने का सेवन करें और यह भी ध्यान रखें कि खाने से पहले हाथ अच्छे से धोएं, पके हुए खाने को तुरंत खाएं और बासी खाना न खाएं तथा शारीरिक व्यायाम और योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करें| अंत में उन्होंने बताया किए इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए हम न केवल खुद को स्वस्थ रख सकते हैं, बल्कि दूसरों को भी बीमारियों से बचा सकते हैं तथा स्वच्छता को आदत में बदलकर हम एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जी सकते हैं।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस : विज्ञान प्रदर्शनी

संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर आयोजित विज्ञान प्रदर्शनी में पोस्टर की प्रस्तुति देती छात्राएं

दिनांकः 28 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर व्याख्यान और विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन पंचकर्म सभागार में किया गया है। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2025 के विषय विकसित भारत के लिए विज्ञान और नवाचार में वैश्विक नेतृत्व के लिए भारतीय युवाओं को सशक्त बनाना है विषय पर व्याख्यान देते हुए संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि विज्ञान और नवाचार में भारत को वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करने के लिए युवाओं का सशक्तिकरण अत्यंत आवश्यक है। भारतीय युवा अपनी सोच और नवाचार के साथ दुनिया में बदलाव लाने में सक्षम हैं। उन्हें सही दिशा और संसाधन मिले तो वे न केवल भारत को बल्कि पूरी दुनिया को वैज्ञानिक प्रगति और नवाचार की दिशा में मार्गदर्शन दे सकते हैं। इसलिए, सरकार, शिक्षा संस्थान, उद्योग और समाज को मिलकर भारतीय युवाओं को विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में प्रेरित और सशक्त करना होगा, ताकि भविष्य में भारत एक विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर सके। भारत रत्न और नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ. सी. वी. रमन जी को समर्पित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस युवाओं को नए वैज्ञानिक सोच और अन्वेषकीय दृष्टि के लिए प्रेरणा देता रहेगा।

केंद्रित विषय पर संकाय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के सभी विभागों के विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी के मॉडल, पोस्टर, कोलाज और स्लोगन द्वारा विज्ञान के यात्रा को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया। प्रदर्शनी का संयोजन सहायक आचार्य डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव ने और संचालन शिवम पाण्डेय ने किया।

प्रदर्शनी में प्रमुख रूप से अंशु चौरसिया, साक्षी गुप्ता, दिव्या उपाध्याय, अनन्या, अंशिका, प्रतीक्षा, आरती, जानवी, आयुषी, प्रज्ञा, अंकिता, कनिका, श्वेता रंजन, नेहा, सिद्धांत, काजल, नंदनी सौरव, तस्मीन बानो, निखिल पटेल, रितु मौर्या, अनमोल पाण्डेय, सिद्धांत सिंह, सुहाना सिंह ने पोस्टर, साइंस मॉडल से सभी को आकर्षित किया।

प्रदर्शनी और व्याख्यान में प्रमुख रूप से डॉ. अमित दुबे, डॉ. धीरेंद्र सिंह, डॉ. प्रेरणा त्रिपाठी, डॉ. किरण कुमार, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, डॉ. अवेध नाथ सिंह, डॉ. अंकिता मिश्रा, डॉ. कीर्ति कुमार यादव, डॉ. संदीप कुमार श्रीवास्तव, श्री धनंजय पांडेय, श्री अनिल कुमार, श्रीमती रश्मि झा, सृष्टि यदुवंशी, श्री जन्मेजय सोनी, मिताली, श्री अनिल कुमार मिश्रा, श्री अनिल शर्मा सहित सभी विभागों के शिक्षकगण उपस्थित रहें।

शैक्षणिक भ्रमण

कृषि संकाय

शैक्षणिक भ्रमण के दौरान कृषि संकाय के विद्यार्थी

दिनांकः 28 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित कृषि संकाय स्नातक के द्वितीय वर्ष के छात्रों ने 'पार्टिसिपेटरी रूरल डेवलपमेंट फाउंडेशन' (पी.आर.डी.एफ.) बीज विद्यायान संयत्र, खलीलाबाद, संत कबीर नगर का शैक्षणिक भ्रमण किया।

छात्रों ने शैक्षणिक भ्रमण के दौरान बीज प्रसंस्करण इकाई के अंतर्गत सीड क्लीनर, सीड ग्रेडर, सिलेंडर ग्रैफ्टिंग मशीन, सीड सेलेक्शन तथा सीड भंडारण के उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के साथ–साथ काला नमक धान व गेंहू की डीबी डब्लू 187 प्रजाति के बीज प्रसंस्करण व विपणन के बारे में जाना।

यह शैक्षणिक भ्रमण कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे के निर्देशानुसार व सहायक आचार्य डॉ. सास्वती प्रेमकुमारी, पी.आर.डी.एफ. के संस्थापक पदम श्री प्रो. (डॉ.) रामचेत चौधरी व प्रबंधन निदेशक (एम.डी.) श्री पुष्कर चौधरी के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इस दौरान स्नातक कृषि विज्ञान द्वितीय वर्ष के समस्त छात्र– छात्राएं उपस्थित रहें।

तृतीय एकदिवसीय शिविर

कृषि संकाय

पौधरोपण हेतु जागरूक करते कृषि संकाय के विद्यार्थी

दिनांकः 28 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना की पारिजात इकाई द्वारा आज सिकटौर ग्राम सभा में तृतीय एकदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया।

इस शिविर में 'वृक्ष लगाओ, हरियाली बढ़ाओ', 'लेबल पढ़ेगा भारत' और 'स्वच्छता जागरूकता' जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अभियान चलाया गया।

शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने 'पेड़ लगाओ, पर्यावरण बचाओ' और 'शुद्ध हवा अगर है लेनी, तो पेड़ लगाना है ज़रूरी' जैसे प्रभावी स्लोगन के माध्यम से ग्रामवासियों को हरियाली का महत्व समझाया।

ग्रामीणों को जागरूक करते हुए उन्हें स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति सचेत किया गया।

साथ ही, खाद्य पदार्थों के लेबल पढ़कर जागरूक उपभोग करने, हानिकारक पदार्थों के सेवन से बचने, नशामुक्ति अपनाने और कूड़ा प्रबंधन जैसे विषयों पर जानकारी दी गई।

इस अवसर पर ग्राम प्रधान श्री राकेश सिंह ने स्वयंसेवकों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे जागरूकता अभियान ग्रामीण समुदाय के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इससे न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है, बल्कि स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा के प्रति भी लोगों में जागरूकता बढ़ती है। उन्होंने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय सेवा

आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

योजना के स्वयंसेवकों को इस प्रकार के सराहनीय प्रयासों के लिए शुभकामनाएँ दीं और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन की उम्मीद जताई।

शिविर का आयोजन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आयुष कुमार पाठक के नेतृत्व में एवं अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे और समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे के मार्गदर्शन में सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर अनुराग कसौधन, विकास यादव, सत्यम तिवारी, अंजलि सिंह, अंकिता कुशवाहा, अखिलेश चौरसिया, अक्षय पांडेय, ज़ुबैर अहमद, आलोक पटेल, विशाल गुप्ता इत्यादि समेत पारिजात इकाई के सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहें।

ऑनलाइन व्याख्यान

प्रबंधन विभाग, वाणिज्य संकाय

विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए श्री रविकांत यामर्थी

दिनांकः 28 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्रबंधन विभाग, वाणिज्य संकाय में 28 फरवरी 2025 को 'उद्योग की आवश्यकताओं और कार्यबल कौशल के बीच की खाई को पाटना' विषय पर एक विशेष ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया।

इस व्याख्यान को लॉजिस्टिक्स सेक्टर स्किल काउंसिल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री रविकांत यामर्थी ने संबोधित किया।

इस अवसर पर प्रो. एस. गणेशन (प्रोफेसर, प्रमुख शैक्षिक पहल, लॉजिस्टिक्स सेक्टर स्किल काउंसिल) और प्रो. (डॉ.) गायत्री एच (प्रमुख, स्कूल में स्किलिंग और अकादमिक लिंकेज, लॉजिस्टिक्स सेक्टर स्किल काउंसिल) भी उपस्थित रहीं।

उन्होंने छात्रों को बीबीए इन लॉजिस्टिक्स पाठ्यक्रम के महत्व और करियर संभावनाओं के बारे में जानकारी दी।

इसके अतिरिक्त, इस व्याख्यान में डॉ. तरुण शम और अन्य शिक्षकगण भी उपस्थित थे।

स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम

नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

प्राथमिक विद्यालय में दंत एवं क्षय रोगों के प्रति जागरूक करती नर्सिंग की छात्राएं

दिनांकः 28 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत बेसिक बी. एस.सी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष के कुल 30 छात्राओं ने तीन शिक्षिकाओ (मिस प्राची, मिस विनीता, मिस अभ्या प्रजापति) के मार्गदर्शन में जंगल कौड़िया, गोरखपुर में स्थित प्राथमिक विद्यालय (घुरवा टोला) में दंत क्षय पर स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन किया।

इसमें कक्षा 5 तक के छात्र–छात्राएं उपस्थित थे। छात्राओं ने नुक्कड़ नाटक एवं चार्ट प्रस्तुति के मध्यम से कुछ मुख्य बिन्दु जैसे–दंत क्षय की परिभाषा, मुख्य कारक, हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर पडने वाले विभिन प्रभाव, विशेषताएं, जटिलताएं, प्रबंध तथा विभिन्न दंत रोगों से बचाव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। दंत क्षय (दांतों में सड़न) एक समस्या है जिसमें बैक्टीरिया मीठे खाद्य पदार्थों से एसिड बनाकर दांतों को नुकसान पहुंचाते हैं। यह अधिक मिठाई खाने, सही तरीके से ब्रश न करने से होता है। इसके लक्षणों में दांतों में दर्द, गर्म या ठंडे खाने से संवेदनशीलता और दांतों पर काले धब्बे या छेद शामिल हैं। अगर समय पर इलाज न किया जाए, तो यह तेज दर्द, संक्रमण या दांत टूटने का कारण बन सकता है। इलाज में दांत भरना (फिलिंग) या गंभीर मामलों में दांत निकालना शामिल है। इससे बचने के लिए रोज़ दो बार फ्लोराइड युक्त टूथपेस्ट से ब्रश करें, कम मीठा खाएं, ज्यादा पानी पिएं और नियमित रूप से डेंटिस्ट के पास जाएं। अंत में उन्होंने बताया कि स्वस्थ दांत आपकी मुस्कान को मजबूत और सुंदर बनाए रखते हैं इसलिये याद रखें, एक छोटी अच्छी आदत आपके दांतों को जिंदगीभर मजबूत और स्वस्थ बनाए रख सकती है।

खाद्य निर्माण प्रदर्शन

नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय

पौष्टिक आहार बनाती छात्रा

दिनांकः 28 फरवरी, 2025 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंर्तगत संचालित नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय के नर्सिंग विभाग में अध्ययनरत बेसिक बी. एस.सी. नर्सिंग चतुर्थ वर्ष के कुल 30 छात्राओं ने तीन शिक्षिकाओं (मिस खुशबू, मिस समरीन, मिस श्रद्धा) के मार्गदर्शन में जंगल कौड़िया, गोरखपुर में चयनित लाभार्थी जैसे विभिन्न आयु वर्ग के (पांच वर्ष से कम, वयस्क, बुजुर्ग, प्रसवपूर्व और प्रसवोत्तर माता) एवं उनके परिवार के सदस्यों के लिए खाद्य निर्माण प्रदर्शन का आयोजन किया। जिसमें उन्होंने विभिन्न आहार जैसे (फाइबर, प्रोटीन, आयरन एवं कैल्शियम युक्त) पर आधारित अलग–अलग प्रकार के खाद्य पदार्थ (खिचड़ी, दलिया, पालक पराठा, कटलेट, चिल्ला, खीर, रायता) आदि तैयार किए। उन्होंने ए.वी. एड्स की सहायता से सभी खाद्य पदार्थ के पोषक मूल्यों, विभिन्न स्रोतों और हमारे स्वास्थ्य के लिए इसके महत्व के बारे में बताते हुए कहा की स्वस्थ जीवन के लिए संतुलित आहार बहुत जरूरी है, जिसमें फाइबर, प्रोटीन, आयरन और कैल्शियम भरपूर मात्रा में होना चाहिए। खिचड़ी और दलिया पाचन के लिए अच्छे होते हैं और शरीर को ऊर्जा देते हैं।

पालक पराठा और कटलेट आयरन से भरपूर होते हैं, जो खून की कमी (अनीमिया) को दूर करने में मदद करते हैं। चिल्ला और रायता प्रोटीन और प्रोबायोटिक्स का अच्छा स्रोत हैं, जो मांसपेशियों को मजबूत रखते हैं और पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाते हैं। खीर कैल्शियम से भरपूर होती है, जिससे हड्डियां और दांत मजबूत होते हैं। अंत में उन्होंने कहा किए इन पौष्टिक खाद्य पदार्थों को अपने आहार में शामिल करके हम स्वस्थ रह सकते हैं और बीमारियों से बच सकते हैं। याद रखें, सही आहार ही स्वस्थ शरीर और खुशहाल जीवन की कुंजी हैं।

फरवरी माह की मुख्य बैठकें

27 फरवरी 2025

कुलसचिव महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 27 फरवरी, 2025 को राष्ट्रीय सेवा योजना के सप्तदिवसीय विशेष शिविर आयोजन के पर विचार–विमर्श हेतु बैठक सम्पन्न हुई।

बैठक में उपस्थिति निम्नवत रही:–

1. डॉ. प्रदीप कुमार राव, कुलसचिव – अध्यक्ष
2. डॉ. अखिलेश कुमार दबे, समन्वयक – सदस्य
3. श्री श्रीकान्त, उप कुलसचिव (प्रशासन) – सदस्य
4. श्री आनन्द कुमार आर्या, उप वित्त अधिकारी – सदस्य
5. श्री योगेन्द्र कुमार, पीए टू रजिस्ट्रार – सदस्य
6. श्री जयन्त सिंह, लेखाकार – सदस्य
7. श्री वत्स त्रिवेदी, कार्यालय सहायक – सदस्य

निम्नलिखित निर्णय लिये गये:–

1. सभी इकाईयों का खाता खोला जाए, खातों का संचालन कार्यक्रम अधिकारी एवं कार्यक्रम समन्वयक के द्वारा संयुक्त रूप से किया जाए।
2. सप्तदिवसीय विशेष शिविर सम्बन्धित वित्तीय फाइल श्री आनन्द कुमार आर्य, उप वित्त अधिकारी के निरीक्षणोपरान्त अग्रसारित की जाए।
3. राष्ट्रीय सेवा योजना से सम्बन्धित सभी बिल पर राष्ट्रीय सेवा योजना, इकाई एवं विश्वविद्यालय, का नाम अंकित किया जाए।
4. यदि बिल जी.एस.टी. हो तो उस बिल पर विश्वविद्यालय का जी.एस.टी. नम्बर अंकित किया जाए।
5. वित्तीय पत्रावली 15 मार्च तक तैयार कर ली जाए, ताकि इसका भुगतान समय से किया जा सकें।
6. शासन से प्राप्त अनुदान का भात प्रतिशत उपभोग किये जाने के लिए फाइल इत्यादि तैयार कर लिया जाए।

मार्च, 2025 की प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विभागीय आयोजन

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

12 मार्च, 2025	वर्ल्ड किडनी डे
24 मार्च, 2025	राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत महंत अवेद्यनाथ इकाई द्वारा सप्त दिवसीय कैंप का आयोजन

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

17–22 मार्च, 2025	द्वितीय आंतरिक मूल्यांकन
30 मार्च – 01 अप्रैल, 2025	अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

कृषि संकाय

30–08 मार्च, 2025	प्रथम आंतरिक परीक्षा
20 मार्च, 2025	अतिथि व्याख्यान
24–30 मार्च, 2025	राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत महंत पारिजात इकाई द्वारा सप्त दिवसीय कैंप का आयोजन

फॉर्मेसी संकाय

01–05 मार्च, 2025	प्रथम आंतरिक परीक्षा का मूल्यांकन
22 मार्च, 2025	अतिथि व्याख्यान
24–30 मार्च, 2025	राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत सप्त दिवसीय कैंप का आयोजन

गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

08 मार्च, 2025	विश्व महिला दिवस
24 मार्च, 2025	विश्व क्षयरोग दिवस (जागरूकता कार्यक्रम)

गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

01–07 मार्च, 2025	राष्ट्रीय सेवा योजना सप्तदिवसीय शिविर
07 मार्च, 2025	अतिथि व्याख्यान

समाचार दर्पण

निःशुल्क परीक्षण शिविर में 213 लोगों के नेत्रों की हुई जांच

पूर्वा टाइम्स समाचार।
गोरखपुर, । महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के दिग्विजयनाथ चिकित्सालय में रविवार को निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 213 लोगों के नेत्रों की जांच की गई। निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर का उद्घाटन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, चिकित्सालय इंचार्ज एवं नर्सिंग प्राचार्य डॉ. डीएस अजीथा ने किया। नेत्र सर्जन डॉ. एपी त्रिपाठी के नेतृत्व में मरीजों की निशुल्क जांच कर निशुल्क नेत्र शल्य और निशुल्क दवाएं प्रदान की गईं।
इस दौरान मरीजों को ऑपरेशन की सुविधा भी निशुल्क प्रदान की गई। चिकित्सालय इंचार्ज डॉ. डीएस अजीथा ने बताया कि दिग्विजयनाथ चिकित्सालय सतत लोगों की सेवा में उपलब्ध रहता है और यहा मरीजों की सेवा ईश्वरीय सेवा भाव से की जाती है।
अगला निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर 2 मार्च को संभावित है ।

डॉ. जीएन सिंह, डॉ. सुरेंद्र सिंह, डॉ. प्रदीप राव समेत अन्य की मौजूदगी में एमओयू हुआ।

गोरखनाथ विवि, कृषि विज्ञान केंद्र के बीच हुआ समझौता

एमओयू

पीपीगज हिन्दुस्तान संवाद। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह की अध्यक्षता और महायोगी गोरखनाथ विवि के कुलपति डॉ सुरेंद्र सिंह व कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव की उपस्थिति में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, पीपीगंज के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) हुआ।
कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ आर के सिंह तथा विश्वविद्यालय के कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ विमल कुमार दुबे ने इस पर हस्ताक्षर किए। इस दौरान फैसला हुआ कि दोनों संस्थाएं मिलकर कृषि क्षेत्र में छात्रों की शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देने में सहायता करेंगी। किसानों एवं छात्रों को कृषि विषय सम्बंधित कार्यशाला, प्रशिक्षण, शोध कार्य, ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव आदि से भी लाभान्वित किया जा सकेगा। इस मौके पर केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ. संदीप प्रकाश उपाध्याय एवं फॉर्म मैनेजर आशीष कुमार सिंह मौजूद रहे।

औषधीय औद्योगिकी विषय पर विशेष व्याख्यान

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय में सोमवार को औषधीय औद्योगिकी विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता उत्कृष्टता केंद्र (प्रशिक्षण और प्लेसमेंट) के प्रमुख कृष्ण चंद ने फार्मास्युटिकल उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग और शिक्षा के बीच संबंधों के महत्व को भी समझाया और उन्हें फार्मास्युटिकल उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार अपने कौशल और ज्ञान को विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

यथार्थवादी परिदृश्य बनाने की विधि है सिमुलेशन : डॉ. अजीथा

स्वतंत्र चेतना
गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ नर्सिंग एंड पैरामेडिकल में सिमुलेशन और ओएससीई वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य ब्रिजिंग द गैप बिटवीन थ्योरी एंड प्रैक्टिस रहा।
इस अवसर पर नर्सिंग संकाय की प्रमुख डॉ. डीएस अजीथा ने बताया कि सिमुलेशन यथार्थवादी परिदृश्य बनाने की विधि है जो छात्रों को कौशल का अभ्यास करने की अनुमति देता है। यह छात्रों को निर्णय लेने की क्षमता, समस्या समाधान की क्षमता विकसित करने में मदद करता है तथा उन्हें सुरक्षित वातावरण में सिद्धांतों को लागू करने की अनुमति देता है। सिमुलेशन का उद्देश्य मानवीय त्रुटि को कम करना, रोगी देखभाल कौशल का अभ्यास करना, गलती की अनुमति देना और उसमें सुधार करना है।
डॉ. अजीथा ने सिमुलेशन की विभिन्न पद्धतियों के बारे में भी बताया। उप प्राचार्य प्रिसी जॉर्ज ने कार्यशाला के विषय में संक्षिप्त जानकारी दी।

औषधीय औद्योगिकी विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित

स्वतंत्र चेतना
गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय में सोमवार को औषधीय औद्योगिकी विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।
मुख्य वक्ता उत्कृष्टता केंद्र के प्रमुख कृष्ण चंद ने फार्मास्युटिकल उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं के बारे में जानकारी दी।
उन्होंने छात्रों को फार्मास्युटिकल उद्योग और शिक्षा के बीच संबंधों के महत्व को भी समझाया, और उन्हें फार्मास्युटिकल उद्योग की आवश्यकताओं के अनुसार अपने कौशल और ज्ञान को विकसित करने के लिए प्रेरित किया।
इस अवसर पर फामेसी संकाय के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, सहायक आचार्य पीयूष आनन्द, दिलीप मिश्रा, जूही तिवारी एवं फामेसी संकाय के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नर्सिंग स्टाफ की आवश्यकता पूर्ति को भारत की ओर देख रही दुनिया : डॉ. भावतोष

नर्सिंग सेवा क्षेत्र में छात्रों को भी आगे आना चाहिए : प्रो. सुरिंदर सिंह

» महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल सेवा शपथ ग्रहण समारोह

स्वतंत्र चेतना
गोरखपुर। दी वेस्ट बंगाल विश्वविद्यालय ऑफ हेल्थ साइंसेज के पूर्व कुलपति और सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय कोलकाता के एमेरिटस प्रोफेसर प्रो. भावतोष विश्वास ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्षेत्र है। इस स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में दुनिया में 45 लाख नर्सिंग स्टाफ की आवश्यकता है। पूरी दुनिया इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए भारत की तरफ देख रही है। डॉ. विश्वास सोमवार को बसंत पंचमी के अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल की तरफ से आयोजित दीप प्रज्वलन एवं सेवा शपथ ग्रहण समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में नर्सिंग सेवा क्षेत्र को मजबूत करने का रूप इस विश्वविद्यालय में दिख रहा है। यहां का नर्सिंग कॉलेज देश के सर्वश्रेष्ठ नर्सिंग संस्थानों में से एक है। समारोह के विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व ड्रग कंट्रोलर और मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय नई ऊर्जा और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा है। यहां का नर्सिंग कॉलेज उत्तर प्रदेश में उत्तम सेवा के लिए प्रेरणादायक संस्थान बना है। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने नर्सिंग छात्राओं का दीक्षा मार्गदर्शन करते हुए कहा कि नर्सेज, सेवा संकल्प भाव से इस क्षेत्र में स्वयं को उतारें जिससे चिकित्सा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन आ सके। समाज और पीड़ित व्यक्ति आपके प्रति आशान्वित रहता है की नर्स दीदी है तो उसे जीवन का वरदान मिल जायेगा।
इस अवसर पर विश्वविद्यालय में स्थित मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अरविंद कुशवाहा ने कहा कि नर्सिंग में सभी को स्वस्थ रखना आपकी नई चुनौती होगी। कोविड में आपने महत्वपूर्ण चुनौती को स्वीकार किया, नर्सिंग में जीवन को समर्पित करने का भाव जागृत हुआ। नर्सिंग उच्चतम सेवा कार्य है। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव व डॉ. डीएस अजीथा ने अतिथियों को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। मंच संचालन निधि वर्मा, रोमा, आकांक्षा ने किया।

हीरक जयंती के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कृत करेंगे

»75वें वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित हीरक जयंती समारोह की तैयारियों को लेकर

सेवा शपथ ग्रहण समारोह में बोलते प्रो. भावतोष विश्वास और उपस्थित पैरामेडिकल की छात्राएं। स्रोत-महायोगी गोरखनाथ विवि

नर्सिंग स्टाफ की आवश्यकता पूर्ति को भारत की ओर देख रही दुनिया

अमर उजाला ब्यूरो

फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल ने आयोजित किया सेवा शपथ ग्रहण समारोह

गोरखपुर। द वेस्ट बंगाल विश्वविद्यालय ऑफ हेल्थ साइंसेज के पूर्व कुलपति और सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय कोलकाता के एमेरिटस प्रोफेसर प्रो. भावतोष विश्वास ने कहा कि दुनिया भर में 45 लाख नर्सिंग स्टाफ की आवश्यकता है। पूरी दुनिया इसकी पूर्ति के लिए भारत की तरफ देख रही है। नर्सिंग की पढ़ाई करने वालों को भविष्य में रोजगार की कमी नहीं होगी।
प्रो. भावतोष विश्वास सोमवार को वसंत पंचमी के अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ नर्सिंग और पैरामेडिकल की तरफ से आयोजित 'दीप प्रज्वलन एवं सेवा शपथ ग्रहण समारोह' को बतौर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। नर्सेज को चिकित्सा में समर्पण, सेवा और कर्तव्य निष्ठा का संकल्प दिलाते हुए प्रो. भावतोष ने कहा कि प्राचीन वैदिक चिकित्सा में महर्षि चरक ने विश्व को चिकित्सा सेवा का अनमोल ज्ञान दिया जिसका पूरा विश्व अनुकरण कर रहा है।
समारोह के विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व ड्रग कंट्रोलर और मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि छात्र जीवन में साधना के साथ सामंजस्य, संतुलन बना कर चलना होगा। समारोह की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने कहा कि प्रोफेशनल नर्स के लिए रोजगार के अपार अवसर है।

स्वास्थ्य सेवा दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्षेत्र

सेवा शपथ ग्रहण समारोह

- दुनिया में 45 लाख नर्सिंग स्टाफ की आवश्यकता : प्रो. भावतोष विश्वास
- नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय : जीएन सिंह

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : दी वेस्ट बंगाल विश्वविद्यालय आफ हेल्थ साइंसेज के पूर्व कुलपति प्रो. भावतोष विश्वास ने कहा कि स्वास्थ्य सेवा दुनिया का सबसे बड़ा कार्यक्षेत्र है। इस क्षेत्र में दुनिया में 45 लाख नर्सिंग स्टाफ की आवश्यकता है। पूरी दुनिया इस आवश्यकता पूर्ति के लिए भारत की तरफ देख रही है। वह वसंत पंचमी के दिन सोमवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फैकल्टी आफ नर्सिंग और पैरामेडिकल की ओर से आयोजित 'दीप प्रज्वलन व सेवा शपथ ग्रहण समारोह' को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।
विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व ड्रग कंट्रोलर डा. जीएन सिंह ने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय नई ऊर्जा और नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहा है। यहां का नर्सिंग कालेज उत्तर प्रदेश में उत्तम सेवा के लिए प्रेरणादायक संस्थान बना है। अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने नर्सिंग छात्राओं का दीक्षा मार्गदर्शन करते हुए कहा कि नर्सेज, सेवा संकल्प भाव से इस क्षेत्र में स्वयं को उतारें, जिससे चिकित्सा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन आ सके। विश्वविद्यालय के मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा. अरविंद कुशवाहा, नर्सिंग संकाय की प्रमुख डा. डीएस अजीथा, कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने अतिथियों को सम्मानित किया। संचालन निधि वर्मा, रोमा, आकांक्षा ने किया।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में दीप प्रज्वलन करतीं नर्सिंग छात्राएं। • सौ. विश्वविद्यालय

यथार्थवादी परिदृश्य बनाने की विधि है सिमुलेशन

कार्यक्रम में आयोजित 'सिमुलेशन और ओएससीई' कार्यशाला में नर्सिंग संकाय की प्रमुख डा. डीएस अजीथा ने कहा कि सिमुलेशन यथार्थवादी परिदृश्य बनाने की विधि है। यह छात्रों को कौशल का अभ्यास करने की अनुमति देती है। इससे छात्रों की निर्णय क्षमता व समस्या समाधान की क्षमता विकसित होती है। इस अवसर पर उप प्राचार्य प्रिसी जार्ज, सहायक प्रोफेसर ममता, एसोसिएट प्रोफेसर रंजीता आरएम उपस्थित थीं।

फार्मास्युटिकल उद्योग की वर्तमान स्थिति पर चर्चा

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के फार्मेसी संकाय में सोमवार को औषधीय औद्योगिकी विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता उत्कृष्टता केंद्र के प्रमुख कृष्ण चंद ने फार्मास्युटिकल उद्योग की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा की। इस अवसर पर फार्मेसी संकाय के प्राचार्य डा. शशिकांत सिंह, सहायक आचार्य पीयूष आनंद, दिलीप मिश्रा, जूही तिवारी उपस्थित रहीं।

समाचार दर्पण

'सिद्धांत व व्यवहार के अंतर को समझाता है सिमुलेशन'

महायोगी गोरखनाथ विवि के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में वर्कशॉप का तीसरा दिन

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। सिमुलेशन अंतर संवादी शिक्षण पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान करता है। यह सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर को समझाता है। इससे जटिल परिस्थितियों में आलोचनात्मक सोच, नैदानिक तर्क और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है। ये बातें महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में सिमुलेशन वर्कशॉप के तीसरे दिन बुधवार को मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एम्स गोरखपुर में कॉलेज ऑफ नर्सिंग के सहायक प्रोफेसर डॉ. देवीगा टी. ने कहीं।

उन्होंने सिमुलेशन आधारित शिक्षा में डी-ब्रीफिंग की कला के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि फीडबैक और डी-ब्रीफिंग में अंतर को समझना जरूरी है। डी-ब्रीफिंग के लिए सुरक्षित वातावरण चाहिए और इसमें प्रतिभागियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

डी-ब्रीफिंग सिमुलेशन का अंग है और एक संरचित, चिंतनशील प्रक्रिया है। यह प्रतिभागियों को अपने कार्य का विश्लेषण करने, निर्णय लेने पर चर्चा करने और सहायक वातावरण में सुधार के क्षेत्र की पहचान करने की अनुमति देता है।

डेल्टा हेल्थकेयर के चीफ सिमुलेशन एजुकेटर राहुल बिष्ट ने वर्कशॉप के प्रतिभागियों से अब तक के अनुभव के बारे में पूछा और उनका मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में नर्सिंग संकाय की उप प्राचार्या प्रिंसी जॉर्ज ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

दवाओं के अन्वेषण में हो रहे हैं नए प्रयोग : डॉ. रामा द्विवेदी

महायोगी गोरखनाथ विवि में दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर के बचाव पर हुआ विशेष व्याख्यान

जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं में होते हैं समान तत्व : डॉ. रामा द्विवेदी

संवाददाता।

गोरखपुर । जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन डीसी, यूएसए के प्रो. (डॉ.) रामा एस. द्विवेदी ने कहा कि वर्तमान दौर में दवाओं के अन्वेषण में नए प्रयोग हो रहे हैं। फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एफडीए) की तरफ से इस पर खासा जोर दिया जा रहा है।

डॉ. रामा बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पंचकर्म सभागार में 'दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर' विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। दवा अनुमोदन प्रक्रिया पर अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन में अन्वेषणीय दृष्टि से अनंत चुनौतियां और संभावनाएं हैं। उच्च स्तरीय गुणवत्ता के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में दवाओं पर शोध कार्य किया गया है जिससे दवाओं और वैक्सीन के अच्छे परिणाम आए हैं। यूएस एफडीए के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए डॉ. रामा ने दवा विकास के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं के बारे महत्वपूर्ण जानकारी साझा करते हुए बताया कि दोनों प्रकार की दवाओं में समान तत्व होते हैं और वे समान औषधीय प्रभाव दिखाते हैं। हालांकि, जेनेरिक दवाएं ब्रांड नाम वाली दवाओं की तुलना में सस्ती होती हैं। डॉ. रामा ने एफडीए द्वारा दवा अनुमोदन की प्रक्रिया को भी विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि एफडीए कर्मचारी दवाओं की सुरक्षा और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। व्याख्यान में डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने सामान्य कैंसर, स्तन कैंसर, मुंह के कैंसर और ह्यूमन पैपिलोमावायरस (एचपीवी) का परिचय दिया। डॉ. अनुराग ने कैंसर के प्रभाव उसके उपचार और रोकथाम पर सभी का मार्गदर्शन किया। अतिथि स्वागत फार्मेसी संकाय के प्राचार्य डॉ. शशिकांत सिंह, संचालन सहायक आचार्य पीयूष आनंद व धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदान्तम ने किया। इस अवसर पर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह, कृषि विज्ञान के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, पैरामेडिकल संकाय के प्राचार्य डॉ रोहित श्रीवास्तव, बीबीए लॉजिस्टिक विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, डॉ अमित दुबे, डॉ अनुपमा ओझा, डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पाण्डेय, डॉ अमित उपाध्याय, डॉ अभिषेक कुमार सिंह, प्रवीण कुमार सिंह समेत सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

दवाओं के अन्वेषण में हो रहे नए प्रयोग : डॉ रामा

» महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर के बचाव पर हुआ विशेष व्याख्यान

» जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं में होते हैं समान तत्व : डॉ रामा

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। अमेरिका के जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय के प्रो डॉ रामा एस द्विवेदी ने कहा कि वर्तमान दौर में दवाओं के अन्वेषण में नए प्रयोग हो रहे हैं। फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से इस पर खासा जोर दिया जा रहा है। डॉ. रामा बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पंचकर्म सभागार में दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। दवा अनुमोदन प्रक्रिया पर अपना अनुभव साझा करते हुए उन्होंने कहा कि फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन में अन्वेषणीय दृष्टि से अनंत चुनौतियां और संभावनाएं है। उच्च स्तरीय गुणवत्ता के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में दवाओं पर शोध कार्य किया गया है जिससे दवाओं और वैक्सीन के अच्छे परिणाम आए हैं। यूएस एफडीए के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने दवा विकास के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी साझा करते हुए बताया कि दोनों प्रकार की दवाओं में समान तत्व होते हैं और वे समान औषधीय प्रभाव दिखाते हैं। हालांकि, जेनेरिक दवाएं ब्रांड नाम वाली दवाओं की तुलना में सस्ती होती है।

डॉ अनुराग श्रीवास्तव ने सामान्य कैंसर, स्तन कैंसर, मुंह के कैंसर और ह्यूमन पैपिलोमा वायरस का परिचय दिया। डॉ अनुराग ने कैंसर के प्रभाव उसके उपचार और रोकथाम पर सभी का मार्गदर्शन किया।

इस अवसर पर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ अरविंद सिंह कुशवाहा, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो सुनील कुमार सिंह, कृषि विज्ञान के अधिष्ठाता डॉ विमल कुमार दुबे, पैरामेडिकल संकाय के प्राचार्य डॉ रोहित श्रीवास्तव, बीबीए लॉजिस्टिक विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. तरुण श्याम, डॉ अमित दुबे, डॉ अनुपमा ओझा, डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव, डॉ आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पाण्डेय, डॉ अमित उपाध्याय, डॉ अभिषेक कुमार सिंह, प्रवीण कुमार सिंह समेत सभी शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

आज तीन व्याख्यानों की 7 घंटे

एमजीयूजी में 30 मार्च से होगी अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में सोसाइटी फॉर बायोटेक्नोलॉजिस्ट इंडिया (एसबीटीआई) के सहयोग से 30 मार्च से एक अप्रैल तक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी होगी। इसमें इस्राइल, नेपाल, श्रीलंका, कोरिया, अमेरिका, इंग्लैंड और जर्मनी से भी विषय विशेषज्ञ प्रतिभाग करेंगे। इसके लिए भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने चार लाख रुपये का अनुदान भी कॉलेज को दिया है।

एमजीयूजी में संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि संगोष्ठी के जरिये प्राचीन आयुर्वेद के सिद्धांतों को जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र में बहुउपयोगी बनाने का प्रयास किया जाएगा। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई दी है। ब्यूरो

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए भारत सरकार से मिला अनुदान

■ आयुर्वेद और बायोमेडिकल विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग विषय पर 30 मार्च से होगी संगोष्ठी

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में सोसाइटी फार बायोटेक्नोलाजिस्ट इंडिया (एसबीटीआई) के सहयोग से होने वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने 4 लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया है। यह तीन दिवसीय संगोष्ठी 30 मार्च से 1 अप्रैल तक आयोजित होगी।

एमजीयूजी में संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के जरिये प्राचीन आयुर्वेद के सिद्धांतों को जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र में बहुउपयोगी बनाने का प्रयास किया जाएगा।

संगोष्ठी आयोजक समिति के सचिव डा. अमित दुबे और डा. अनुपमा ओझा ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए इजरायल, नेपाल, श्रीलंका, कोरिया, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी से भी विषय विशेषज्ञ प्रतिभाग कर रहे हैं। महायोगी गोरखनाथ विवि के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मिलने वाले अनुदान से विश्वविद्यालय गौरवान्वित हुआ है।

दवाओं के अन्वेषण में हो रहे हैं नए प्रयोग : डा. रामा

■ महायोगी गोरखनाथ विवि में दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर के बचाव पर व्याख्यान

गोरखपुर (एसएनबी)। जार्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन डीसी, यूएसए के प्रो. रामा एस द्विवेदी ने कहा कि वर्तमान दौर में दवाओं के अन्वेषण में नए प्रयोग हो रहे है। फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ से इस पर खासा जोर दिया जा रहा है।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के पंचकर्म सभागार में बुधवार को डा. रामा 'दवा अनुमोदन प्रक्रिया और कैंसर' विषय पर आयोजित व्याख्यान को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। दवा अनुमोदन प्रक्रिया पर अपना अनुभव साझा करते हुए, उन्होंने कहा कि फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन में अन्वेषणीय दृष्टि से अनंत चुनौतियां और संभावनाएं हैं। उच्च स्तरीय गुणवत्ता के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नोबेल पुरस्कार से सम्मानित वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में दवाओं पर शोध कार्य किया गया है जिससे दवाओं और वैक्सीन के अच्छे परिणाम आए हैं। डा. रामा ने दवा विकास के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने जेनेरिक और ब्रांडेड दवाओं के बारे महत्वपूर्ण जानकारी साझा करते हुए बताया कि दोनों प्रकार की दवाओं में समान तत्व होते हैं और वे समान औषधीय प्रभाव दिखाते हैं। जेनेरिक दवाएं ब्रांड नाम वाली दवाओं की तुलना में सस्ती होती हैं। डा. रामा ने एफडीए द्वारा दवा अनुमोदन की प्रक्रिया को भी विस्तार से समझाया। उन्होंने छात्रों की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। व्याख्यान में डा. अनुराग श्रीवास्तव ने सामान्य कैंसर, स्तन कैंसर, मुंह के कैंसर और ह्यूमन पैपिलोमावायरस का परिचय दिया। डा. अनुराग ने कैंसर के प्रभाव उसके उपचार और रोकथाम पर सभी का मार्गदर्शन किया। अतिथि स्वागत फार्मेसी संकाय के प्राचार्य डा. शशिकांत सिंह ने किया। संचालन सहायक आचार्य पीयूष आनंद व धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद कालेज के प्राचार्य डा. गिरिधर वेदान्तम ने किया। इस अवसर पर मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा. अरविंद सिंह कुशवाहा, संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह, कृषि विज्ञान के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दुबे, पैरामेडिकल संकाय के प्राचार्य डा. रोहित श्रीवास्तव, डा. तरुण श्याम, डा. अमित दुबे, डा. अनुपमा ओझा, डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव, डा. आशुतोष श्रीवास्तव, धनंजय पाण्डेय, डा. अमित उपाध्याय, डा. अभिषेक कुमार सिंह एवं प्रवीण कुमार सिंह समेत शिक्षक एवं छात्र उपस्थित रहे।

सिमुलेशन वर्कशॉप में दी गई संकट में संसाधन प्रबंधन की जानकारी

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में जारी सिमुलेशन वर्कशॉप के चौथे दिन प्रतिभागियों को संकट में चिकित्सा संसाधन प्रबंधन विषय पर जानकारी दी गई। साथ ही हृदयाघात व अन्य आपात स्थिति में तत्काल पहल लेने के बारे में जानकारी देकर पूर्वाभ्यास कराया गया। एम्स गोरखपुर में कॉलेज ऑफ नर्सिंग के सहायक आचार्य अरुण वर्गीस ने स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर के लिए सिमुलेशन आधारित शिक्षा के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संकट के समय चिकित्सा संसाधन और समय का उचित प्रबंधन बेहद जरूरी है। ऐहतियातन उठाए जाने कदम तभी कारगर होंगे जब उन्हें निर्धारित समय सीमा में उठाया जाए। इस अवसर पर एम्स गोरखपुर में कॉलेज ऑफ नर्सिंग की सह प्राध्यापक सीमा एस. चव्हाण ने कहा कि संकट संसाधन प्रबंधन के लिए पारस्परिक तथा संज्ञानात्मक कौशल आवश्यक है। ब्यूरो

अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए भारत सरकार से मिला चार लाख का अनुदान

» आयुर्वेद और बॉयोमेडिकल विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग विषय पर 30 मार्च से होगी संगोष्ठी

स्वतंत्र चेतना गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय से संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में सोसाइटी फॉर बायोटेक्नोलॉजिस्ट इंडिया के सहयोग से होने वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग ने 4 लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया है। तीन दिवसीय संगोष्ठी 30 मार्च से 1 अप्रैल तक आयोजित होगी। संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के जरिये प्राचीन आयुर्वेद के सिद्धांतों को जैव प्रौद्योगिकी के माध्यम से आधुनिक चिकित्सा क्षेत्र में बहु उपयोगी बनाने का प्रयास किया जाएगा। संगोष्ठी आयोजक समिति के सचिव डॉ. अमित दुबे और डॉ. अनुपमा ओझा ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए इजरायल, नेपाल, श्रीलंका, कोरिया, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी से भी विषय विशेषज्ञ प्रतिभाग करेंगे। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बधाई देते हुए कहा कि अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए मिलने वाले अनुदान से विश्वविद्यालय गौरवान्वित हुआ है।

सिद्धांत व व्यवहार अंतर को समझाता है सिमुलेशन - डॉ. देवीगा

महायोगी गोरखनाथ विवि के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में वर्कशॉप का तीसरा दिन

ग्राम स्वराज्य (संवाददाता)

गोरखपुर, 5 फरवरी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में सिमुलेशन वर्कशॉप के तीसरे दिन बुधवार को मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एम्स गोरखपुर में कॉलेज ऑफ नर्सिंग के सहायक प्रोफेसर डॉ. देवीगा टी. ने कहा कि सिमुलेशन अंतर संवादी शिक्षण पर व्यावहारिक जानकारी प्रदान करता है। यह सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर को समझाता है। डॉ. देवीगा ने सिमुलेशन आधारित शिक्षा में डी-ब्रीफिंग की कला पर महत्वपूर्णजानकारी दी। उन्होंने बताया कि फीडबैक और डी-ब्रीफिंग में अंतर को समझना जरूरी है। डी-ब्रीफिंग के लिए सुरक्षित वातावरण चाहिए और इसमें प्रतिभागियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उन्होंने बताया कि सिमुलेशन यह जटिल परिस्थितियों में आलोचनात्मक सोच, नैदानिक तर्क और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है। डी-ब्रीफिंग इसका अंग है और एक संरचित, चिंतनशील प्रक्रिया है। यह प्रतिभागियों को अपने कार्य का विश्लेषण करने, निर्णय लेने पर चर्चा करने और सहायक वातावरण में सुधार के क्षेत्र की पहचान करने की अनुमति देता है। यह प्रदान घटना पर चिंतन की अवधारणा, तत्पश्चात विश्लेषण, चिंतनशील शिक्षण को बढ़ावा देने के अवसर प्रदान करता है। इस अवसर पर डेल्टा हेल्थकेयर के चीफ सिमुलेशन एजुकेटर राहुल बिष्ट ने वर्कशॉप के प्रतिभागियों से अब तक मिले अनुभव के बारे में पूछा और उनका मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में नर्सिंग संकाय की उप प्राचार्या प्रिंसी जॉर्ज ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

समाचार दर्पण

Cadaver is the first guru of medical students: Prof. Bhavatosh

Cadaveric oath organized for MBBS first year students at Shri Gorakhnath Medical College Hospital and Research Center

JEEVAN EXPRESS BUREAU

GORAKHPUR: Former Vice Chancellor of The West Bengal University of Health Sciences Kolkata and Emeritus Professor of Sister Nivedita University Kolkata, Senior Heart Surgeon Dr. Bhavatosh Biswas said that the cadaver (corpse or dead human body) is the first Guru of medical students. The students of medical science start their knowledge journey in the medical field by taking oath in front of this Guru.

Prof. Bhavatosh Biswas was addressing the Cadaveric Oath Ceremony organized for MBBS first year students at Sri Gorakhnath Medical College Hospital and Research Center of Mahayogi Gorakhnath University on Saturday as the chief guest.

On this occasion, MBBS first year students were administered the traditional oath to consider the human body (cadaver) as the first Guru in the dissection room of the Anatomy Department of the Medical College. Addressing the students, Prof. Bhavatosh said that along with the Cadaveric Oath, the practical classes of new students of medical science have also started. He said that you have worshipped the cadaver, so always have a feeling of respect towards this Guru. Through this cadaver, you are getting an opportunity to study the anatomy of the human body scientifically. This study will make you a capable doctor to serve humanity in the future.

Present as a special guest, former Drugs Controller General of India and advisor to the Chief Minister of UP, Dr. GN Singh said that one should not make the mistake of considering the cadaver given to the medical college as a mere dead body. These cadavers are an important medium to acquire medical knowledge. Vice Chancellor of Mahayogi Gorakhnath University, Prof. Surinder Singh, while wishing the MBBS students a bright future, said that while it is difficult for medical colleges to get even one cadaver, the MBBS students of this medical college have seven cadavers available for practical study.

Gorakhpur, cyber fraudsters ...ook away eight lakh rupees

were stolen from HDFC and AU Small Finance Bank accounts. The fraud came to light when the payment link for car insurance was sent. A case has been registered in the cyber police station and investigation has been started. Police have warned to avoid APK files, as it gives fraudsters an opportunity to access the entire data of your mobile.

मेडिकल विद्यार्थियों का पहला गुरु होता है कैडेवर : प्रो. भावतोष

भास्कर ब्यूरो

• गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए कैडेवरिक ओथ का आयोजन

गोरखपुर। द वेस्ट बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ़ हेल्थ साइंसेज कोलकाता के पूर्व कुलपति और सिस्टर निवेदिता विश्वविद्यालय कोलकाता के एमिरेट्स प्रोफेसर, सीनियर हार्ट सर्जन डॉ. भावतोष विश्वास ने कहा कि कैडेवर (शव या मृत मानव शरीर) मेडिकल विद्यार्थियों का प्रथम गुरु होता है। इस गुरु के सामने ही शपथ लेकर चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थी चिकित्सा क्षेत्र की अपनी ज्ञान यात्रा शुरू करते हैं।

प्रो. भावतोष विश्वास शनिवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए आयोजित कैडेवरिक ओथ सेरेमनी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक एवं यूपी के मुख्यमंत्री के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि मेडिकल कॉलेज को मिले कैडेवर को शव मात्र समझने की भूल नहीं होनी चाहिए। ये कैडेवर चिकित्सकीय ज्ञान प्राप्त करने महत्वपूर्ण माध्यम हैं। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह ने एमबीबीएस छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज से आपकी व्यवहारिक शिक्षा भी प्रारंभ हो रही है। उन्होंने बताया कि मेडिकल कॉलेजों को जहां एक कैडेवर हासिल करना कठिन होता है वहीं इस मेडिकल कॉलेज के एमबीबीएस स्टूडेंट्स को व्यवहारिक अध्ययन के लिए सात कैडेवर उपलब्ध हैं।

शव शपथ कार्यक्रम में शरीर रचना विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रियंका सिंह ने कहा कि कैडेवरिक ओथ देहदान के पश्चात देह को गुरु मानकर उनके सम्मान में एमबीबीएस छात्रों द्वारा ली जाने वाली पारम्परिक शपथ को कहते हैं। उन्होंने मेडिकल के छात्रों को देहदान करने वाले व्यक्ति के पार्थिव शरीर को सर्वोच्च सम्मान के साथ व्यवहार करने, मृतक व उनके परिवार के प्रति जीवन पर्यन्त आभार की अनुभूति रखने तथा इस महान बलिदान से अर्जित ज्ञान से समाज की सेवा करने की शपथ दिलाई।

इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्राचार्य डॉ. अरविंद सिंह कुशवाहा, नर्सिंग संकाय की प्राचार्या एवं हॉस्पिटल इंचार्ज डॉ. डीएस अजीथा समेत कई विभागों के प्रमुख, शिक्षक और एमबीबीएस के सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

क्लिनिकल क्षमता को सिमुलेशन की दें जानकारी

गोरखपुरः इंटीग्रल हास्पिटल आइआइएमएसआर लखनऊ की नर्सिंग अधीक्षक डा. अन्नापुमा रेड्डी ने कहा कि क्लिनिकल क्षमता बढ़ाने के लिए नर्सिंग स्टाफ को सिमुलेशन की विधिवत जानकारी होनी चाहिए। क्लिनिकल क्षमता स्वास्थ्य पेशेवरों की रोगी देखभाल, नैदानिक निर्णय और व्यावसायिक कौशल की दक्षता को दर्शाती है। डा. रेड्डी, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में तीन फरवरी से आयोजित सिमुलेशन वर्कशाप के समापन समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रही थीं। कहा कि क्लिनिकल क्षमता के मूल्यांकन में संसाधनों की कमी और सुयोग्य परीक्षकों की कमी जैसी चुनौतियां सामने आती हैं।

क्लिनिकल क्षमता बढ़ाने के लिए सिमुलेशन की जानकारी जरूरी : डॉ. रेड्डी

»महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय के नर्सिंग संकाय में वर्कशॉप का समापन समारोह

स्वतंत्र चेतना

गोरखपुर। महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में विगत 3 फरवरी से आयोजित सिमुलेशन वर्कशॉप का समापन हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि इंटीग्रल हॉस्पिटल, आईआईएमएसआर लखनऊ की नर्सिंग अधीक्षक डॉ. अन्नापुमा रेड्डी रहीं।

उन्होंने क्लिनिकल क्षमता के मूल्यांकन की जानकारी देते हुए कहा कि इस क्षमता को बढ़ाने के लिए नर्सिंग स्टाफ को सिमुलेशन की विधिवत जानकारी होनी चाहिए।

डॉ. रेड्डी ने कहा कि क्लीनिकल क्षमता स्वास्थ्य पेशेवरों की रोगी देखभाल, नैदानिक निर्णय और व्यावसायिक कौशल की दक्षता को दर्शाती है। पर, क्लिनिकल क्षमता के मूल्यांकन में संसाधनों की कमी और सुयोग्य परीक्षकों की कमी जैसी चुनौतियां सामने आती हैं। इसके बावजूद, यह एक विश्वसनीय प्रणाली है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में यूपी स्टेट मेडिकल फैकल्टी की नर्सिंग सलाहकार डॉ. नीतू देवी, स्टेट प्रोग्राम ऑफिसर डॉ. मोनिका रीटा हेड्रिक्स, प्रोग्राम ऑफिसर एनी निर्मला उपस्थित थी। नर्सिंग संकाय की प्राचार्या डॉ. डीएस अजीथा, उप प्राचार्या प्रिंसी जॉर्ज ने स्मृति चिन्ह प्रदान कर अतिथियों का अभिनंदन किया।

ased pilgrim was identified as Deena Chaudhary (55). Other injured pilgrims were rushed

During initial ... tigation, it came to light that a

Agri expert shares info on latest tech with Gkp students

Arjumand Bano | TNN

Agricultural scientist Padma Shri Ram Chet Chaudhary

Gorakhpur: Eminent agricultural scientist and Padma Shri awardee Ram Chet Chaudhary on Saturday delivered an insightful lecture on '50 Minutes, 50 Years' at the Faculty of Agriculture, Mahayogi Gorakhnath University, Gorakhpur.

Sharing his vast research experience, Chaudhary shed light on revolutionary advancements and innovations in agriculture, emphasizing the sector's immense potential for growth and development.

During his address, he hailed the revival of Kala Namak rice as a groundbreaking initiative in modern agriculture, detailing its economic benefits and potential for farmers.

Reflecting on his collaboration with Green Revolution pioneer M.S. Swaminathan, he underscored how nations like Cambodia and the Philippines have leveraged agricultural advancements to boost their economies with support from institutions like IRRI.

Chaudhary also proposed a future collaboration with the university to promote the cultivation of golden sweet potato, a potential remedy for diseases related to vitamin D deficiency.

With a distinguished career spanning research and advisory roles in over 104 countries, including the US, Myanmar, Africa, Chaudhary has contributed significantly to agricultural self-sufficiency and food exports through his work with the World Bank, FAO, IRRI, and other prestigious institutions.

Biotech students' group explores natural water

मेडिकल विद्यार्थियों का पहला गुरु होता है कैडेवर : प्रो. भावतोष

श्री गोरखनाथ मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर में एमबीबीएस प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए कैडेवरिक ओथ का आयोजन

संवाददाता

कैडेवरिक ओथ सेरेमनी को संबोधित करते मुख्य अतिथि प्रो. भावतोष विश्वास

समाचार दर्पण

ब्रेस्ट कैंसर के रिस्क फैक्टर्स को समझना ज्यादा जरूरी- डॉ. सुनीता

गोरखपुर, १९ फरवरी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में 'मैनेजमेंट ऑफ ब्रेस्ट कैंसर = अर्ली डायग्नोसिस एंड ट्रीटमेंट' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित ऑक्सफोर्ड एंड सेंट पीटर्स हॉस्पिटल यूनाइटेड किंगडम (यूके) की विशेषज्ञ डॉ. सुनीता श्रोत्रिय (ऑन्कोलॉजिस्ट ब्रेस्ट सर्जन) ने ब्रेस्ट कैंसर के कारणों, लक्षणों, जांच प्रक्रियाओं और उपचार के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. सुनीता ने कहा कि ब्रेस्ट कैंसर को महिलाओं को प्रभावित करने वाला सबसे आम कैंसर है। सबसे जरूरी इसके लक्षणों और इसके रिस्क फैक्टर्स को समझने की जरूरत है। यदि समय रहते इसका पता चल जाए तो कुशल प्रबंधन और निदान से सर्जरी की आवश्यकता को रोका जा सकता है। हालांकि सर्जरी की जरूरत हो भी तो आज के दौर में ऐसी पद्धतियां उपलब्ध हैं जिनसे मरीज के जीवन में जोखिम कम से कम आता है। उन्होंने ब्रेस्ट कैंसर की सर्जरी में हुए और हो रहे निरंतर शोध और अनुसंधान की भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. सुनीता ने कहा कि इस लिहाज से स्कारलेस ब्रेस्ट सर्जरी एक नए युग की शुरुआत है। इसमें त्वचा पर निशान नहीं पड़ता और मरीज को असुविधा कम होती। डॉ. सुनीता ने यह निष्कर्ष भी निकाला कि रोगियों के साथ व्यक्तिगत संबंध उनके उपचार परिणामों पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। व्याख्यान के अंत में धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपीकृष्ण ने किया। व्याख्यान सत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह सहित आयुर्वेद, फार्मेसी, नर्सिंग आदि संकाय के प्रमुख, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

❖ महायोगी गोरखनाथ विवि में ब्रेस्ट कैंसर पर अतिथि व्याख्यान में बोलीं यूके की विशेषज्ञ

ब्रेस्ट कैंसर के रिस्क फैक्टर्स को समझना ज्यादा जरूरी : डॉ. सुनीता

महायोगी गोरखनाथ विवि में ब्रेस्ट कैंसर पर अतिथि व्याख्यान में बोलीं यूके की विशेषज्ञ

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में 'मैनेजमेंट ऑफ ब्रेस्ट कैंसर = अर्ली डायग्नोसिस एंड ट्रीटमेंट' विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित ऑक्सफोर्ड एंड सेंट पीटर्स हॉस्पिटल यूनाइटेड किंगडम (यूके) की विशेषज्ञ डॉ. सुनीता श्रोत्रिय (ऑन्कोलॉजिस्ट ब्रेस्ट सर्जन) ने ब्रेस्ट कैंसर के कारणों, लक्षणों, जांच प्रक्रियाओं और उपचार के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. सुनीता ने कहा कि ब्रेस्ट कैंसर को महिलाओं को प्रभावित करने वाला सबसे आम कैंसर है। सबसे

जरूरी इसके लक्षणों और इसके रिस्क फैक्टर्स को समझने की जरूरत है। यदि समय रहते इसका पता चल जाए तो कुशल प्रबंधन और निदान से सर्जरी की आवश्यकता को रोका जा सकता है। हालांकि सर्जरी की जरूरत हो भी तो आज के दौर में ऐसी पद्धतियां उपलब्ध हैं जिनसे मरीज के जीवन में जोखिम कम से कम आता है। उन्होंने ब्रेस्ट कैंसर की सर्जरी में हुए और हो रहे निरंतर शोध और अनुसंधान की भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ. सुनीता ने कहा कि इस लिहाज से स्कारलेस ब्रेस्ट सर्जरी एक नए युग की शुरुआत है। इसमें त्वचा पर निशान नहीं पड़ता और मरीज को असुविधा कम होती। डॉ. सुनीता ने यह निष्कर्ष भी निकाला कि रोगियों के साथ व्यक्तिगत संबंध उनके उपचार परिणामों पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। व्याख्यान के अंत में धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपीकृष्ण ने किया।

'ब्रेस्ट कैंसर के रिस्क फैक्टर्स को समझना ज्यादा जरूरी'

गोरखपुर। ऑक्सफोर्ड एंड सेंट पीटर्स हॉस्पिटल यूनाइटेड किंगडम (यूके) की विशेषज्ञ डॉ. सुनीता श्रोत्रिय (ऑन्कोलॉजिस्ट ब्रेस्ट सर्जन) ने कहा कि ब्रेस्ट कैंसर महिलाओं को प्रभावित करने वाला सबसे आम कैंसर है। इसके लक्षणों और इसके रिस्क फैक्टर्स को समझने की जरूरत है। यदि समय रहते इसका पता चल जाए तो कुशल प्रबंधन और निदान से सर्जरी की आवश्यकता को रोका जा सकता है। स्कारलेस ब्रेस्ट सर्जरी एक नए युग की शुरुआत है। इसमें त्वचा पर निशान नहीं पड़ता और मरीज को असुविधा कम होती है।

डॉ. सुनीता बुधवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में 'मैनेजमेंट ऑफ ब्रेस्ट कैंसर : अर्ली डायग्नोसिस एंड ट्रीटमेंट' विषय पर अतिथि व्याख्यान दे रही थीं। डॉ. सुनीता ने ब्रेस्ट कैंसर के कारणों, लक्षणों, जांच प्रक्रियाओं और उपचार के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने कहा कि मरीजों के साथ व्यक्तिगत संबंध उनके उपचार परिणामों पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। व्याख्यान के अंत में धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. गोपीकृष्ण ने किया। व्याख्यान सत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरिंदर सिंह सहित आयुर्वेद, फार्मेसी, नर्सिंग आदि संकाय के प्रमुख, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। संवाद

ब्रेस्ट कैंसर के रिस्क फैक्टर्स को समझना ज्यादा जरूरी : डॉ. सुनीता

महायोगी गोरखनाथ विवि में ब्रेस्ट कैंसर पर अतिथि व्याख्यान में बोलीं यूके की विशेषज्ञ

गोरखपुर(विधान केसरी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज आयुर्वेद कॉलेज में मैनेजमेंट ऑफ ब्रेस्ट कैंसर अर्ली डायग्नोसिस एंड ट्रीटमेंट विषय पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित ऑक्सफोर्ड एंड सेंट पीटर्स हॉस्पिटल यूनाइटेड किंगडम यूके की विशेषज्ञ डॉ सुनीता श्रोत्रिय ऑन्कोलॉजिस्ट ब्रेस्ट सर्जनड ने ब्रेस्ट कैंसर के कारणों, लक्षणों, जांच प्रक्रियाओं और उपचार के विकल्पों पर विस्तार से चर्चा की।

डॉ सुनीता ने कहा कि ब्रेस्ट कैंसर को महिलाओं को प्रभावित करने वाला सबसे आम कैंसर है। सबसे जरूरी इसके लक्षणों और इसके रिस्क फैक्टर्स को समझने की जरूरत है। यदि समय रहते इसका पता चल जाए तो कुशल प्रबंधन और निदान से सर्जरी की आवश्यकता को रोका जा सकता है। हालांकि सर्जरी की जरूरत हो भी तो आज के दौर में ऐसी पद्धतियां उपलब्ध हैं जिनसे मरीज के जीवन में जोखिम कम से कम आता है। उन्होंने ब्रेस्ट कैंसर की सर्जरी में हुए और हो रहे निरंतर शोध और अनुसंधान की भी विस्तार से जानकारी दी। डॉ सुनीता ने कहा कि इस लिहाज से स्कारलेस ब्रेस्ट सर्जरी एक नए युग की शुरुआत है। इसमें त्वचा पर निशान नहीं पड़ता और मरीज को असुविधा कम होती।

डॉ सुनीता ने यह निष्कर्ष भी निकाला कि रोगियों के साथ व्यक्तिगत संबंध उनके उपचार परिणामों पर गहरा प्रभाव डाल सकते हैं। व्याख्यान के अंत मे धन्यवाद ज्ञापन आयुर्वेद संकाय के रोग निदान एवं विकृति विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ गोपीकृष्ण ने किया। व्याख्यान सत्र में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो सुरिंदर सिंह सहित आयुर्वेद, फार्मेसी, नर्सिंग आदि संकाय के प्रमुख, शिक्षक एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

चित का नियंत्रण ही योग : डॉ. नारायण

गोरखपुर.। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) में संहिता सिद्धांत एवं संस्कृत विभाग की तरफ से शनिवार को अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता आईटीएम आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एच. नारायण ने अष्टांग योग पर विस्तार से जानकारी दी। डॉ. नारायण ने कहा कि जो निरंतर गतिमान है, चेतना युक्त है, शरीर, इन्द्रिय, मन, और आत्मा से संयुक्त है उसे आयु कहते है। ऐसा चरक, सुश्रुत आदि ऋषियों ने बताया है। सभी दोष, अग्नि, धातु और मल और क्रियाएं, संतुलित अवस्था में हों और मन, इन्द्रिय और आत्मा प्रसन्न हो तो ऐसा व्यक्ति स्वस्थ कहा जाता है। उन्होंने कहा कि अपने चित्त अर्थात मन का नियंत्रण ही योग है। योग के आठ अंग यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि हैं। अपने को नियंत्रित रखना ही यम कहलाता है। हिंसा न करना, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य धारण करना, कायिक, मानसिक, वाचिक कोई भी पाप न करना ही यम के अन्तर्गत आता है। मन चाकर है और आत्मा स्वामी, इसलिए अपने को हमेशा अपने नियंत्रण में रखकर जो सम्यक आहार विहार ग्रहण करता है वो स्वस्थ रहता है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का प्रयोजन ही स्वस्थ को स्वस्थ रखना और रोगी को स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कराना है। कार्यक्रम में डॉ शान्तिभूषण और आचार्य साध्वी नन्दन ने मुख्य वक्ता को स्मृति चिन्ह व ग्रंथ भेंटकर सम्मानित किया। आभार ज्ञापन डॉ मिनी केवी महोदया ने किया। इस अवसर पर डॉ सुमित, डॉ दीपू मनोहर, डॉ. देवी और सभी विद्यार्थी उपस्थित रहे।

ग्लूकोमा कार्यशाला में शामिल हुए हुए ऑप्टोमेट्री के छात्र

गोरखपुर, 22 फरवरी। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में संचालित डिपार्टमेंट ऑफ ऑप्टोमेट्री के कुल 35 छात्रों ने श्रीराममूर्ति स्मारक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयोजित दो दिवसीय सीएमई ष्ग्लूकोमा प्रयोगशालाष में प्रतिभाग किया। विद्यार्थियों के साथ विश्वविद्यालय के दो शिक्षक कुंवर अभिनव सिंह राठौर वसुप्रिया गुप्ता ने भी प्रतिभाग लिया। श्रीराममूर्ति मेडिकल कॉलेज के अंतर्गत संचालित ऑप्थाल्मोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ नीलिमा मेहरोत्रा द्वारा ग्लूकोमा व उससे होने वाली तमाम दिक्कतों के बारे में जानकारी साझा की गई। साथ ही ग्लूकोमा एक्सपर्ट्स द्वारा उपचारों के बारे में जानकारी दी गई। विद्यार्थियों के लिए यह एक नया और सुखद अनुभव रहा। इस आयोजन में महायोगी विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ पैरामेडिकल साइंसेज के विभागाध्यक्ष डॉ रोहित कुमार श्रीवास्तव की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

ग्लूकोमा कार्यशाला में शामिल हुए ऑप्टोमेट्री के छात्र

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में संचालित डिपार्टमेंट ऑफ ऑप्टोमेट्री के कुल 35 छात्रों ने श्रीराममूर्ति स्मारक इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में आयोजित दो दिवसीय सीएमई 'ग्लूकोमा प्रयोगशाला' में प्रतिभाग किया।

विद्यार्थियों के साथ विश्वविद्यालय के दो शिक्षक कुंवर अभिनव सिंह राठौर, वसुप्रिया गुप्ता ने भी प्रतिभाग लिया। श्रीराममूर्ति मेडिकल कॉलेज के अंतर्गत संचालित ऑप्थाल्मोलॉजी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. नीलिमा मेहरोत्रा द्वारा ग्लूकोमा व उससे होने वाली तमाम दिक्कतों के बारे में जानकारी साझा की गई। साथ ही ग्लूकोमा एक्सपर्ट्स द्वारा उपचारों के बारे में जानकारी दी गई। इस आयोजन में महायोगी विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ पैरामेडिकल साइंसेज के विभागाध्यक्ष डॉ. रोहित कुमार श्रीवास्तव की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

समाचार दर्पण

Nursing students made children aware of cleanliness

JEEVAN EXPRESS BUREAU

GORAKHPUR: 30 girl students studying in the fourth year of Basic BSc Nursing in the Nursing and Paramedical Faculty of Mahayogi Gorakhnath University, Gorakhpur, orga-

nized a school health program in the primary school Ghurwa Tola of Jungle Kauriya block and made children aware of cleanliness. During this, with the help of street plays and chart presentation, information was given about the impact of personal hygiene on physical and mental health. Nursing students made children aware about the method of washing hands with soap, regular cleaning of teeth, daily bathing. The students told the children that with cleanliness we can not only keep ourselves healthy, but can also save others from diseases. By turning cleanliness into a habit, we can live a healthy and happy life. Teachers Khushboo, Samreen, Abhaya and Shraddha guided the students.

नर्सिंग छात्राओं ने बच्चों को स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

गोरखपुर (विधान केसरी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के नर्सिंग एवं पैरामेडिकल संकाय में बेसिक बीएससी नर्सिंग चतुर्थ वर्ष में अध्ययनरत 30 छात्राओं ने जंगल कौड़िया ब्लॉक के प्राथमिक विद्यालय घुरवा टोला में स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम का आयोजन कर बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया।

इस दौरान नुक्कड़ नाटक और चार्ट प्रस्तुति की मदद से व्यक्तिगत स्वच्छता के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी दी गई। नर्सिंग छात्राओं ने बच्चों को साबुन से हाथ धोने के तरीके, दांतों की नियमित सफाई, रोजाना स्नान को लेकर जागरूक किया। छात्राओं ने बच्चों से कहा कि स्वच्छता से हम न केवल खुद को स्वस्थ रख सकते हैं, बल्कि दूसरों को भी बीमारियों से बचा सकते हैं। स्वच्छता को आदत में बदलकर हम एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जी सकते हैं। इस आयोजन का मार्गदर्शन शिक्षिकाओं खुशबू, समरीन, अभया और श्रद्धा ने किया।

एनएसएस के स्वयंसेवकों ने शिविर लगा किया जागरूक

जासं, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की पारिजात इकाई द्वारा शुक्रवार को सिकटौर ग्रामसभा में पौधरोपण और स्वच्छता के प्रति जागरूक करने को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान स्वयंसेवकों ने पेड़ लगाओ-पर्यावरण बचाओ और शुद्ध हवा अगर है लेनी-तो पेड़ लगाना है जरूरी जैसे स्लोगन के माध्यम से ग्रामवासियों को हरियाली का महत्व समझाया। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए उन्हें स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति सचेत किया गया।

इस अवसर पर ग्राम प्रधान राकेश सिंह ने स्वयंसेवकों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे जागरूकता अभियान ग्रामीण समुदाय के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिविर का आयोजन कार्यक्रम अधिकारी डा. आयुष कुमार पाठक के नेतृत्व में, अधिष्ठाता डा. विमल कुमार दूबे और समन्वयक डा. अखिलेश कुमार दूबे के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर पारिजात इकाई के सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

विज्ञान और नवाचार में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण

विज्ञान प्रदर्शनी का अवलोकन करते प्रो. सुनील कुमार सिंह● जागरण

जासं, गोरखपुरः महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर व्याख्यान और विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन पंचकर्म सभागार में किया गया। इस मौके पर विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि विज्ञान और नवाचार में भारत को वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करने के लिए युवाओं की भूमिका का अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रो. सिंह ने कहा कि भारतीय युवा अपनी सोच और नवाचार के साथ दुनिया में बदलाव लाने में सक्षम हैं। उन्हें सही दिशा और संसाधन मिले तो वे न केवल भारत को बल्कि पूरी दुनिया को वैज्ञानिक प्रगति और नवाचार की दिशा में मार्गदर्शन दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि भारत रत्न और नोबेल पुरस्कार विजेता डा. सीवी रमन को समर्पित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस युवाओं को नए वैज्ञानिक सोच और अन्वेषकीय दृष्टि के लिए प्रेरणा देता रहेगा। इस अवसर पर संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के सभी विभागों के विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी में माडल, पोस्टर, कोलाज और स्लोगन द्वारा विज्ञान की यात्रा को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का संयोजन सहायक आचार्य डा. संदीप कुमार श्रीवास्तव और संचालन शिवम पांडेय ने किया।

विज्ञान और नवाचार में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण : प्रो. सिंह

महायोगी गोरखनाथ विवि में विज्ञान दिवस पर प्रदर्शनी व व्याख्यान का आयोजन

गोरखपुर (विधान केसरी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर व्याख्यान और विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन पंचकर्म सभागार में किया गया। व्याख्यान में संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने कहा कि विज्ञान और नवाचार में भारत को वैश्विक नेतृत्व प्राप्त करने के लिए युवाओं की भूमिका का अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रो. सिंह ने कहा कि भारतीय युवा अपनी सोच और नवाचार के साथ दुनिया में बदलाव लाने में सक्षम हैं। उन्हें सही दिशा और संसाधन मिले तो वे न केवल भारत को बल्कि पूरी दुनिया को वैज्ञानिक प्रगति और नवाचार की दिशा में मार्गदर्शन दे सकते हैं। इसलिए, सरकार, शिक्षा संस्थान, उद्योग, और समाज को मिलकर भारतीय युवाओं को विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में प्रेरित और सशक्त करना होगा, ताकि भविष्य में भारत एक विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्वकर्ता के रूप में उभर सके। उन्होंने कहा कि भारत रत्न और नोबेल पुरस्कार विजेता डॉ सीवी रमन को समर्पित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस युवाओं को नए वैज्ञानिक सोच और अन्वेषकीय दृष्टि के लिए प्रेरणा देता रहेगा।

इस अवसर पर संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के सभी विभागों के विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान प्रदर्शनी में मॉडल, पोस्टर, कोलाज और स्लोगन द्वारा विज्ञान की यात्रा को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का संयोजन सहायक आचार्य डॉ संदीप कुमार श्रीवास्तव और संचालन शिवम पाण्डेय ने किया।

रासेयो स्वयंसेवकों ने शिविर लगाकर ग्रामीणों को जागरूक किया

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, गोरखपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना (रासेयो) की पारिजात इकाई द्वारा आज सिकटौर ग्रामसभा में पौधरोपण और स्वच्छता के प्रति जागरूक करने को एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने पेड़ लगाओ–पर्यावरण बचाओ और शुद्ध हवा अगर है लेनी–तो पेड़ लगाना है जरूरी जैसे स्लोगन के माध्यम से ग्रामवासियों को हरियाली का महत्व समझाया। ग्रामीणों को जागरूक करते हुए उन्हें स्वच्छता, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति सचेत किया गया। साथ ही, खाद्य पदार्थों के लेबल पढ़कर जागरूक उपभोग करने, हानिकारक पदार्थों के सेवन से बचने, नशामुक्ति अपनाने, और कूड़ा प्रबंधन जैसे विषयों पर जानकारी दी गई। इस अवसर पर ग्राम प्रधान राकेश सिंह ने स्वयंसेवकों के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे जागरूकता अभियान ग्रामीण समुदाय के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इससे न केवल पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है, बल्कि स्वास्थ्य, स्वच्छता और शिक्षा के प्रति भी लोगों में जागरूकता बढ़ती है। शिविर का आयोजन कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आयुष कुमार पाठक के नेतृत्व में, अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे और समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे के मार्गदर्शन में किया गया। इस अवसर पर पारिजात इकाई के सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

National Service Scheme (NSS) volunteers made the villagers aware

JEEVAN EXPRESS BUREAU

GORAKHPUR: A one-day camp was organized today in Siktaur Gram Sabha by the Parijat unit of National Service Scheme (NSS) of Mahayogi Gorakhnath University, Gorakhpur to create awareness about plantation and cleanliness. During the camp, the volunteers explained the importance of greenery to the villagers through slogans.

While making the villagers aware, they were alerted towards cleanliness, education and health. Also, information was given on topics like conscious consumption by reading the labels of food items, avoiding consumption of harmful substances, adopting de-addiction, and waste management. On this occasion, Gram Pradhan Rakesh Singh appreciated the efforts of the volunteers and said that such awareness campaigns play an important role in the overall development of the rural community. This not only promotes environmental protection, but also increases awareness among the people towards health, cleanliness and education. The camp was organized under the leadership of Program Officer Dr. Ayush Kumar Pathak, under the guidance of Dean Dr. Vimal Kumar Dubey and Coordinator Dr. Akhilesh Kumar Dubey. On this occasion, all the volunteers of Parijat unit were present.

निर्माणाधीन परिसर

01 निमार्णाधीन क्रीडांगन

02 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

मासिक ई-पत्रिका

14 डॉ. भाबतोष विश्वास

15 प्रो. (डॉ.) रमा द्विवेदी

16 डॉ. सूनीता श्रोतरिया

17 डॉ. रामचेत चौधरी

18 डॉ. अनुराग श्रीवास्तव

19 डॉ. जी. एन. सिंह

20 महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र (समझौता ज्ञापन)

21 श्री अरूण वर्गीस

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
आचार्य साध्वीनन्दन पाण्डेय

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह एवं सुश्री स्वेता अल्बर्ट

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय

mguniversitygkp@mgug.ac.in https://www.mgug.ac.in/ +91-9415266014, +91-9935904499, +91-9794299451 Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur